Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

एक नर पंडित प्रवीण,
एकण ने अखर ना चढ़े।

एक आदमी पण्डित और प्रवीण है। एक ऐसा है जो अक्षर भी याद नहीं कर पाता।

–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली | • वर्ष 27 • अंक 41 • 13 जुलाई - 19 जुलाई 2026 | प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-07-2026 • पेज 16 | ₹ 10 रुपये

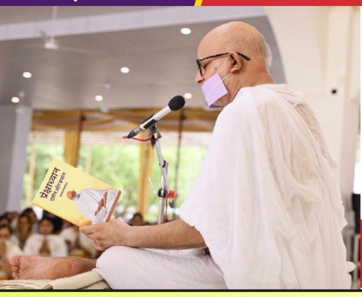

सूर्य की तरह नियमित और व्यवस्थित रहना ही आत्मा का असली तेज़ है: आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

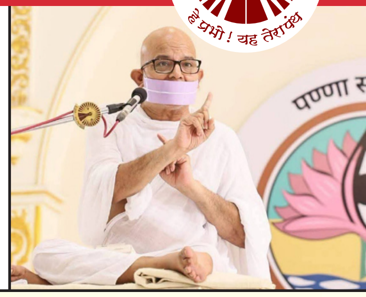

'ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा, यह दुनिया रैन बसेरा' : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

Address Here

'तुलसी' स्वरूपा पवित्र आत्मा 'गंगा' में विलीन हो गई : आचार्यश्री महाश्रमण

गणाधिपति तुलसी के 30वें महाप्रयाण दिवस पर कृतज्ञ संघ ने किया नमन

अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान और नारी सशक्तिकरण के प्रणेता को श्रद्धांजलि; सुधर्मा सभा में उमड़ा चतुर्विध धर्मसंघ

लाडनूं।
03 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता,शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूं की जैन विश्व भारती की सुधर्मा सभा में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अधिशास्ता, युगप्रधान गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का ३०वां महाप्रयाण दिवस पूरी श्रद्धा और गरिमा के साथ समायोजित हुआ।

गुरु और वृद्धों की सेवा ही परमसुख का मार्ग : प्रातः कालीन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में वर्तमान अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने चतुर्विध धर्मसंघ को 'उत्तरज्झयणाणि आगम' के माध्यम से पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि: आगम में जो कल्याणकारी मार्ग बताया गया है, उसके अनुसार गुरु की सेवा करना परमसुख की दिशा में बढ़ाने वाला तत्व है। इसके साथ ही, वृद्धों की सेवा करना भी जीवन को वास्तविक सुख और उन्नति की ओर ले जाता है।

जन्म और मरण सामान्य घटना, महत्वपूर्ण यह है कि जीवन कैसे जिया : गुरुदेव ने गणाधिपति तुलसी के गौरवशाली जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि आज गुरु से जुड़ा हुआ विशेष दिन है। आदमी जन्म लेता है, जीवन जीता है और एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है। जन्म लेना और मृत्यु को प्राप्त होना एक सामान्य घटना है, क्योंकि यह समान रूप से सबके लिए लागू होता है; परन्तु आदमी जीवन को किस तरह जीता है, यह सबसे महत्वपूर्ण है।

१. दीक्षा और दायित्व : आचार्य श्री तुलसी का जन्म वि.सं. १९७१, कार्तिक शुक्ला द्वितीया को लाडनूं की इस पावन धरा पर हुआ था। लाडनूं में ही उन्होंने महज १२वें वर्ष की अल्पायु में मुनित्व को अंगीकार किया।

२. ऊंचाइयों का आधार : आगे चलकर वे तेरापंथ धर्मसंघ के प्रमुख और अधिशास्ता बने। उनके जीवन में पुण्याई का भी अच्छा योग था, साथ ही उनका कड़ा पुरुषार्थ और आंतरिक पवित्रता भी उन्हें ऊँचाइयों तक ले जाने में सहयोगी रहे।

३. एकमात्र आचार्य : गुरुदेव तुलसी का मुनि जीवन अत्यंत गौरवपूर्ण रहा और परम पूज्य कालूगणी ने लगभग २२ वर्ष की अवस्था में ही उन्हें युवाचार्य पद की जिम्मेदारी सौंप दी। वे सबसे कम उम्र में युवाचार्य व आचार्य बनने वाले और सबसे ज्यादा वर्षों तक आचार्य पद पर रहने वाले हमारे धर्मसंघ के एकमात्र आचार्य हुए।

ऐतिहासिक चातुर्मास और देशव्यापी अणुव्रत आंदोलन : शांतिदूत ने आगे फरमाया कि नेतृत्व संभालने के बाद धर्मसंघ ने भी इस युवा आचार्य को बहुत बहुमान दिया, जहाँ मुनि श्री मगनलाल जी स्वामी जैसे वरिष्ठ संतों का उन्हें पूर्ण सहकार मिला।

> जीवन वही सार्थक है, जो मर्यादा और प्रामाणिकता से जिया जाए
>
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. राजधानी में चातुर्मास : आचार्य श्री तुलसी ने वि.सं. २००६ का चातुर्मास जयपुर में और तत्पश्चात् देश की राजधानी दिल्ली में ऐतिहासिक चातुर्मास किया। वे पहले ऐसे आचार्य बने जिन्होंने दिल्ली में चातुर्मास किया, जिससे देश के अनेक राजनेता और धर्मनेता उनके संपर्क में आए।

२. हस्तियों का आगमन : इसके बाद उनके द्वारा प्रारंभ किया गया 'अणुव्रत आन्दोलन' एक ऐसा देशव्यापी कार्यक्रम बना, जिससे लाडनूं जैसे शहर में देश की अनेक बड़ी हस्तियों का आगमन हुआ। वे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य थे जिन्होंने कलकत्ता और फिर दक्षिण भारत की लंबी यात्राएं कीं।

विरोधों को 'विनोद' समझने का क्रांतिकारी घोष : आचार्यप्रवर ने विशेष रूप से रेखांकित करते हुए फरमाया कि यात्राओं के दौरान वैचारिक विरोध भी उनके साथ-साथ चला और संघ के भीतर से भी कुछ संघर्ष उत्पन्न हुए, परन्तु उन संघर्षों से तप कर आचार्य श्री तुलसी का व्यक्तित्व और भी निखर कर सामने आया।

१. कालजयी घोष : उनका यह प्रसिद्ध घोष रहा कि—'जो हमारा करे विरोध, उसे हम समझें विनोद।' उन्होंने तमाम विरोधों को सहजता से झेलते हुए समाज को प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान जैसे क्रांतिकारी आयाम दिए।

२. प्रशासनिक कौशल : वर्ष २०१२ में उन्होंने जो आगम संपादन के कार्य की ज्योति जलाई थी, वह आज भी निरंतर प्रज्ज्वलित हो रही है। आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व का एक सुदृढ़ अंग उनका प्रशासनिक कौशल था। समण श्रेणी, पारमार्थिक शिक्षण संस्था और जैन विश्व भारती जैसे बड़े संस्थान उनके आचार्यकाल में ही प्रारंभ हुए।

३. नवीन उन्मेष : गंगाशहर में उनका महाप्रयाण हुआ था। उनके कार्यकाल में धर्मसंघ में अनेक नवीन उन्मेष हुए, जिससे विशेषकर साध्वी समुदाय और श्राविका समुदाय को आगे बढ़ने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यश्री ने गणाधिपति के प्रति अपनी अत्यंत विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

साध्वी प्रमुखा जी की भावांजलि एवं श्रावक समाज द्वारा श्रद्धांजलि : आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य श्री तुलसी का जीवन एक महान क्रांति का जीवन था, जिसके सुपरिणाम आज हम संघ में देख रहे हैं। उनके पास आत्मबल, अध्यात्म बल, प्रतिभा और संगठन का अनूठा बल था, जिसके आधार पर वे इस व्यापक क्रांति में सफल रहे।

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी प्रति भावांजलि :

१. गीत संगान : साध्वी स्तुतिप्रभा जी व साध्वीवृंद तथा संत वृंद ने सामूहिक गीतों का संगान किया।

२. भावाभिव्यक्ति : पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश करने वाली मुमुक्षु विधि कुण्डलिया और आचार्यश्री तुलसी के सांसारिकपक्षीय परिवार की ओर से राजेन्द्र खटेड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 जुलाई - 19 जुलाई 2026

संकल्प लेना आसान, अंत तक निभाना ही असली साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री की अमृत देशनाः मन भटकने लगे तो तुरंत खींचें घोड़े की लगाम; ७५ की उम्र के बाद बुजुर्गों को जप-ध्यान की सीख

लाडनूं।
05 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी एवं युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को 'नियम व व्रत में सुस्थित रहें' विषय पर भावभीनी अमृत देशना प्रदान की। उत्तरज्झयणाणि आगम के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि अध्यात्म की साधना की दृष्टि से नियम और व्रत का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जीवन को पवित्र बनाने का पाथेय देते हुए फरमाया कि नियम और व्रत लेना एक बात है, परन्तु उन्हें निष्ठा के साथ अंतिम मुकाम तक पहुंचा देना ही वास्तविक सफलता होती है। यदि कोई व्यक्ति दीक्षा या व्रत स्वीकार करके अंतिम श्वास तक उसमें सुस्थित रह जाए, तो यह बेहद विशेष बात होती है।

नियम और व्रत में अंतर तथा अणुव्रत आंदोलन : आचार्यश्री ने नय (दृष्टिकोण) की दृष्टि से नियम और व्रत के सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट करते हुए

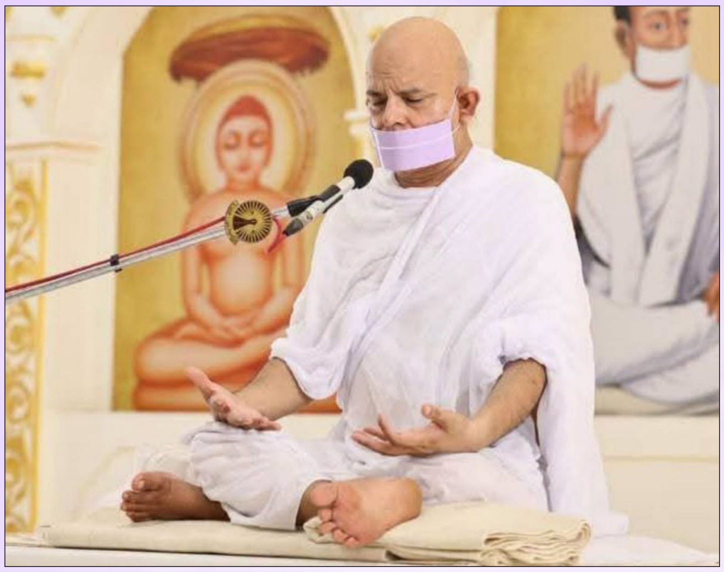

निम्नलिखित मुख्य बिंदु समझाए।

१. नियम क्या है : अपनी पांचों इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण व अनुशासन रखना 'नियम' है।

व्रत क्या है : जैसे साधु-दीक्षा स्वीकार करना, वह 'व्रत' की श्रेणी में आता है।

२. अणुव्रत आंदोलन : परम पूजनीय आचार्य तुलसी द्वारा संप्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन में छोटे-छोटे नियम (अणुव्रत) हैं। इन्हें स्वीकार करके कोई भी आम इंसान अपने जीवन को श्रेष्ठ और आत्मा को पवित्र बना सकता है।

३. धार्मिक लाभ : जो भी जीव तपस्या करता है या नियमों का पालन करता है, चाहे वह मिथ्यात्वी ही क्यों न हो, उसे भी निश्चित रूप से धार्मिक लाभ प्राप्त होता है।

इन्द्रिय संयम और सुप्रणिधान साधना : पूज्यप्रवर ने बताया कि पांच इन्द्रियों (कान, आंख, नाक, जीभ और त्वचा) के पांच विषय (शब्द, रूप, गंध, रस

> भूल हो जाना बड़ी बात नहीं, समय पर उसका 'प्रायश्चित्त' कर लेना ही सच्ची इंसानियत है।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

व स्पर्श) हैं और इनके पांच ही व्यापार (सुनना, देखना, सूंघना, चखना व छूना) हैं। इनका नियंत्रण रखना ही सच्ची साधना है।

१. परिस्थिति के अनुसार ढलें : ध्यान के लिए अलग-अलग संदर्भ और परिस्थितियां हो सकती हैं। जिसकी जैसी जिम्मेदारी हो, उसे वैसी परिस्थिति में खुद को ढाल लेना चाहिए।

२. घोड़े की लगाम सा नियंत्रण : यदि कभी ऐसा लगे कि मन, वचन और काया का दुष्प्रयोग हो रहा है, तो तत्काल उन्हें घोड़े की लगाम की तरह खींचकर ठीक जगह पर अवस्थित कर देना चाहिए।

३. दोष लगने पर तत्काल प्रायश्चित : हमें अपने नियम-व्रतों के प्रति सदा जागरूक रहना चाहिए। यदि अनजाने में कहीं कोई दोष लग भी जाए, तो तत्काल 'आलोचना' और 'प्रायश्चित्त' के माध्यम से आत्मा को शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए।

७५ की उम्र के बाद जनसंपर्क से लें निवृत्ति : आचार्यश्री ने समाज के वरिष्ठ जनों और साधु समुदाय को सुप्रणिधान साधना की प्रेरणा देते हुए दो मुख्य बातें कहीं।

१. बुजुर्गों के लिए संदेश : यदि जीवन में ७५ वर्ष की आयु आ जाए, तो सांसारिक कार्यों और जनसंपर्क से जितनी संभव हो निवृत्ति ले लेनी चाहिए। इस उम्र के बाद अपना अधिकांश समय जप, ध्यान, मौन और स्वाध्याय में लगाएं।

२. साधु समुदाय का कर्तव्य : ध्यान के साथ-साथ साधु-साध्वियों को सेवा के प्रति भी सतत जागरूक रहना चाहिए।

ज्ञानार्थियों की भावपूर्ण प्रस्तुतिः प्रवचन के अंत में आचार्यश्री की पावन सन्निधि में बीदासर ज्ञान शाला के छोटे-छोटे ज्ञानार्थियों ने अपनी अत्यंत सुंदर और भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

सूर्य की तरह नियमित और व्यवस्थित रहना ही आत्मा का असली तेज़ है : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में गूंजा पावन प्रतिबोधः साधु का ज्ञान और चारित्र दोनों तेजस्वी बने, तभी होगा अच्छा विकास

लाडनूं।
04 जुलाई, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने सुधर्मा सभा में 'सूर्य की तरह दीप्तिमान रहें' पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन प्रतिबोध प्रदान किया।

सूर्य के ३ अलौकिक गुणः आचार्यप्रवर ने सुधर्मा सभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि इस सृष्टि में सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और प्राणी हैं और सिद्ध भगवान भी हैं। हमें सूर्य के जीवन से ३ बड़े गुणों की सीख लेनी चाहिए।

१. नियमितता और व्यवस्थितता : सूर्य एक तेजस्वी तत्त्व है जो अद्भुत नियमितता से अपना कार्य करता है। वह मर्यादित रूप में उदय होता है और मर्यादित रूप में ही अस्ताचल को चला जाता है। उसकी यह व्यवस्था हर मनुष्य के लिए प्रेरणादायी है।

२. स्वयं प्रकाशी और प्रकाशक : सूर्य का दूसरा गुण है कि वह स्वयं प्रकाशी है और पूरी सृष्टि को प्रकाश देने वाला है।

३. तापवत्ता : सूर्य का तीसरा गुण है कि यह ताप देने वाला है। सर्दी के मौसम में जब सूर्य उदित होता है, तो उसके ताप से संसार को सर्दी से थोड़ी राहत मिलती है।

तीर्थंकरों की महिमा और साधु जीवन का सूर्यत्वः

१. चंद्रमा से भी निर्मल हैं सिद्ध भगवान : संकीर्तन का हवाला देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि जिस प्रकार आदित्य (सूर्य) आकाश में प्रकाशित होता है, वैसे ही केवल ज्ञानी तीर्थंकर—जो अभी सिद्ध अवस्था में हैं—वे चंद्रमाओं से भी अधिक निर्मल और सूर्यों से भी अधिक प्रकाश करने वाले हैं।

२. सद्ज्ञान से दीप्तिमान हों महर्षि : शास्त्र में कहा गया है कि जैसे सूर्य आकाश में दीप्तिमान होता है, वैसे

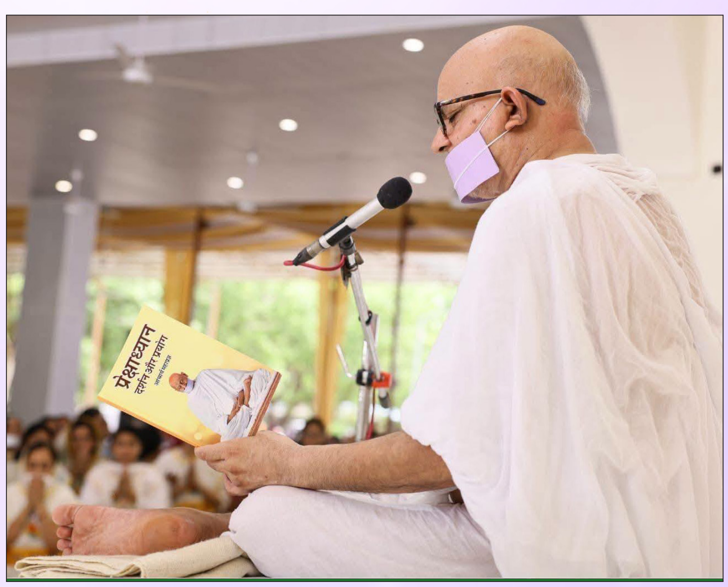

ही साधु या महर्षि को भी सूर्य की तरह दीप्तिमान होना चाहिए। साधु सद्ज्ञान से संपन्न होता है और जिस साधु के पास ज्ञान का भंडार हो, वह साधु स्वतः प्रकाशमान हो सकता है।

३. मति और श्रुत ज्ञान की महत्ता : वर्तमान में केवल ज्ञानी, चतुर्दशपूर्वी अथवा चार ज्ञान संपन्न साधु तो नहीं हैं। अवधि ज्ञानी भी कोई हो तो हो, पर मति और श्रुत ज्ञान संपन्न हैं। गृहस्थ में और पशुओं में भी ये दो ज्ञान हो सकते हैं, लेकिन साधु का ज्ञान विशेष होता है।

व्यक्तित्व निर्माण और अग्रणी साधु-साध्वियों को विशेष प्रेरणाः

> जिसका रुटीन सूर्य की तरह व्यवस्थित है, उसका अस्तित्व कभी अंधकार में नहीं खो सकता।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. रुचि के अनुरूप मिले ज्ञान : कोई साधु अथवा साध्वी सद्ज्ञान से संपन्न हों और वे दूसरों को भी सद्ज्ञान दें तो कितना अच्छा हो सकता है। वे नए साधु-साध्वियों के व्यक्तित्व का निर्माण करने में अच्छा योगदान दे सकते हैं।

२. तीन वर्ष में एक वैरागी तैयार करने का आह्वान : आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों को विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि क्षेत्रों के अथवा सिंघाड़े के अग्रणी साधु-साध्वियां तीन वर्ष में कम से कम एक वैरागी-वैरागण तैयार कर प्रस्तुत करने का प्रयास करें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने किया मार्गदर्शन

नवमनोनीत प्रथम कार्यसमिति का शपथ ग्रहण लाडनूं में

जयपुर।

परम पूज्य गुरुदेव के पावन प्रवास स्थल पर लाडनूं में आचार्य तुलसी ऑडीटोरियम लाडनूं में तेरापंथ युवक परिषद्, जयपुर की नव मनोनीत कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी एवं लाडनूं प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री राजेन्द्र खटेड़ की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। तेरापंथ युवक परिषद्, जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने नव मनोनीत कार्यसमिति के सदस्यों का नामोल्लेख करते हुए उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। उन्होंने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों से आह्वान किया कि वे धर्मसंघ की प्रभावना, संगठन की गरिमा तथा सेवा, संस्कार एवं समर्पण की भावना के साथ अपने दायित्वों का पूर्ण निष्ठा एवं उत्तरदायित्व के साथ निर्वहन करें। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत एवं राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी ने नव मनोनीत कार्यसमिति, परिषद् सभी सदस्यों को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि जयपुर परिषद् नई ऊर्जा एवं सक्रियता के साथ संगठन को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी।

कार्यक्रम की आयोजना में समन्वयक गौतम बरड़िया, संयोजक मोहित गधैया, रोनक बोकड़िया सहित अन्य तेयुप साथियों की उल्लेखनीय सहभागिता रही।

स्वागत उद्बोधन में तेयुप जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि 'जयपुर परिषद सेवा, संस्कार और संगठन के क्षेत्र में निरंतर नए आयाम स्थापित कर रही है। अभातेयुप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुये युवकों का उत्साहवर्धन किया।

प्रेरणादायी कार्यशाला का हुआ आयोजन

भुवनेश्वर।

तेरापंथ युवक परिषद, भुवनेश्वर द्वारा 'Think Different Workshop 3' के अंतर्गत 'Will I Be What I Am Meant To Be?' विषय पर एक प्रेरणादायी कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में मुनि मोहजीत कुमार जी आदि ठाणा 3 के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता मुनि जयेश कुमार जी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने भविष्य का निर्माता है। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, विचार सकारात्मक हों और निरंतर आत्मविकास का प्रयास किया जाए, तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने अनेक जीवन सूत्रों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि सबसे पहले व्यक्ति को सकारात्मक एवं रचनात्मक सोच विकसित करनी चाहिए। जीवन में आगे बढ़ने के लिए जिज्ञासा के साथ प्रश्न पूछने का साहस होना आवश्यक है, क्योंकि प्रश्न ही ज्ञान और विवेक के द्वार खोलते हैं। निरंतर सीखने, स्वयं को बेहतर बनाने और अपनी क्षमताओं का विकास करने की भावना ही व्यक्तित्व विकास का आधार है। उन्होंने कहा कि अपने श्रेष्ठ आचरण, संस्कार और कार्यों से दूसरों को प्रेरित करना ही सच्ची सफलता है। अंततः उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे केवल अनुयायी न बनें, बल्कि अपने चरित्र, सेवा, संस्कार और नेतृत्व क्षमता के बल पर समाज एवं राष्ट्र के लिए प्रेरणादायी नेतृत्व प्रदान करें। कार्यशाला के दौरान जिज्ञासा समाधान सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित युवाओं एवं किशोरों ने जीवन, लक्ष्य, करियर, आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व विकास से जुड़े अनेक प्रश्न पूछे। मुनि जयेश कुमार जी ने सभी जिज्ञासाओं का सरल, व्यावहारिक एवं प्रेरणादायी समाधान प्रदान किया।

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2025 का प्रमाण पत्र वितरण

उत्तर हावड़ा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2025 के उत्तीर्ण संभागियों को प्रमाण पत्र वितरण किए गए। मुनि जिनेशकुमारजी ठाणा 3 के सानिध्य में उत्तर हावड़ा स्थित तेरापंथ सभागार में अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2025 के प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष दीपक नखत, उपाध्यक्ष मनीष बैद, रंजीत सिंह बैद, सहमंत्री लीना सिंघी, सुनीता बैद, कोषाध्यक्ष पारस बरडिया सहित स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

दम्पती कार्यशाला का आयोजन

दादर (मुंबई)।

शासनश्री साध्वी कंचन प्रभाजी तथा शासनश्री साध्वी मंजु रेखाजी के सानिध्य में, तथा दादर महिला मण्डल के तत्वावधान में, नमस्कार महामंत्र से कार्य प्रारंभ कार्यशाला का आयोजन हुआ। 'साध्वी वृन्द के गीत 'जीवन स्वर्ग बनाए' इस मंगल गीत से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।' साध्वी कंचन प्रभाजी ने कहा, दम्पती, दम्पती परिवार की एक ताकत है। अनेक उतार-चढ़ाव के बावजूद भी परिवार के पोषण में अहं भूमिका निभाते हैं। शासनश्री मंजु रेखाजी ने कहा– 'सुहाना सफर' कार्यशाला, अपने आप में संस्कारों के सृजन के साथ घर-घर चेतना का दीया जला रही थी। आगे आपने कहा, बच्चों को अच्छे संस्कार देने की अहं भूमिका होनी चाहिए। ऐसी सुन्दर कार्यशालाएं संस्कृति की प्रतीक है। साध्वी निर्भय प्रभाजी ने महाप्राण ध्वनि से वातावरण आनंदमय बना दिया।

साध्वी चेतनाश्री जी ने जो पूरे काम को कहा वह वाचन का हिस्सा है। इसका मतलब यही है संस्कार और सचाई जिन्दगी को पैदा करते हैं। साध्वी मंजुरेखाजी ने, २१ प्रश्नों के द्वारा पूरी ज्ञानशाला को एक नया उपहार दिया।

महिला मण्डल की मंत्री स्नेहलताने आभार ज्ञापन किया।

'बागबान' कार्यशाला का सफल आयोजन

यशवंतपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में यशवंतपुर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'बागबान' कार्यशाला का सफल आयोजन साध्वी पावनप्रभाजी आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में यशवंतपुर सभाभवन में हुआ। साध्वी पावनप्रभाजी ने विषय पर प्रेरणा देते हुए कहा कि वर्तमान समय में परिवार रूपी बाग को स्नेह, संस्कार एवं संवाद के माध्यम से सदैव हरा-भरा रखना आवश्यक है। आगमवाणी में बताया गया कि धर्म कब व कैसे करना चाहिए। उन्होंने समझाया कि माता-पिता अपने बच्चों के लिए सर्वस्व समर्पित कर देते हैं, इसलिए बच्चों में बचपन से ही धर्म के संस्कारों का बीजारोपण होना चाहिए जिसका सशक्त माध्यम है ज्ञानशाला जहां उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण हो सके। माता-पिता का आचरण ही बच्चों के लिए सर्वोत्तम आदर्श बनता है। परिवार में बड़ों का सम्मान करें, उनकी सेवा के साथ-साथ उन्हें पर्याप्त समय भी दें। परिवार के सभी सदस्य नियमित रूप से साथ बैठकर संवाद करें, जिससे समस्याओं का सहज समाधान प्राप्त हो सके। वही घर स्वर्ग के समान बनता है जहाँ प्रेम, नैतिकता, विनम्रता, परस्पर सम्मान एवं संस्कारों का वातावरण होता है। साध्वी उन्नतयशाजी ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया, जिससे सभी ने आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया। प्रेरणा गीत का संगान मंडल की बहिनो ने किया। महिला मंडल की अध्यक्ष रेखा पितलिया ने सभी उपस्थित बहनो का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया।निवर्तमान अध्यक्ष मीनाक्षी दक ने कार्यशाला के विषय की प्रस्तुति देते हुए कहा कि हमारे बुजुर्ग ऐसे बागबान है जो अपने उत्तरार्द्ध का पूरा जीवन परिवार के पालन-पोषण में लगाते है इसलिए हमें उनके पूर्वार्द्ध को समाधिस्थ बनाना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित बहनों ने अपनी-अपनी जिज्ञासाओ का साध्वी श्री ने अत्यंत सरल एवं प्रभावशाली ढंग से समाधान देते हुए प्रेरणा दी कि परिवर्तन संसार का नियम है, इसलिए सबसे पहले स्वयं में परिवर्तन लाएँ। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री टीना पितलिया द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
13 जुलाई - 19 जुलाई 2026

महिला मंडल का संयुक्त 'श्री उत्सव' सम्पन्न

चेंबूर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन के अंतर्गत चेंबूर महिला मंडल द्वारा श्री उत्सव का आयोजन किया गया। चेम्बुर, घाटकोपर व कुर्ला तीनों क्षेत्रों ने सम्मिलित रूप से यह आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया। आशा ताई मराठे ने महिलाओं के इस प्रयास की बहुत सराहना की। सुषमा सावंत ने भी महिलाओं का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें स्वावलंबी बनने की प्रेरणा दी । तथा चेम्बुर महिला मंडल के इस कार्य की बहुत सराहना की । तेरापंथी सभा मुंबई के कोषाध्यक्ष रिंकू बाफना ने भी अपनेउद्गगार व्यक्त किए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की विशेष आमंत्रित सदस्या मीना बडाला ने कविता के माध्यम से इस कार्यक्रम की सराहना की। मुंबई में इस समय वर्षा अपने भाल पर तिलक सजाएं पूरे जोर शोर पर थी, फिर भी महिलाओं ने श्री उत्सव का आनंद लिया। उथोपिया हॉल में मानो हरियाली अमावस्या का माहौल बन गया। महिलाओं ने जोर शोर से खरीदारी की तथा स्टॉलर्स का उत्साहवर्धन किया। आज आचार्य तुलसी विसर्जन दिवस भी था । इस उपलक्ष्य में आने वाले सभी बहनों ने छोटे बड़े त्याग के माध्यम से इस विसर्जन दिवस को भी मनाया। इस श्री उत्सव में महिला मंडल द्वारा एनजीओ अभिषेक शैक्षणिक संस्था को भी स्टॉल प्रदान किया गया।एनजीओ की सुनीता नागरे ने भी महिला मंडल के इस कार्य की प्रशंसा की तथा सदैव सहयोग प्रदान करने के लिए महिला मंडल का आभार व्यक्त किया। बड़े ही हर्षोल्लास के साथ श्री उत्सव का समापन हुआ।

आचार्य महाप्रज्ञ साइंस लैब' का लोकार्पण

सिकंदराबाद।

विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार एवं प्रयोगात्मक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से गवर्नमेंट अपर प्राइमरी स्कूल, मेकलामंडी, सिकंदराबाद में 'आचार्य महाप्रज्ञ साइंस लैब' का भव्य लोकार्पण सम्पन्न हुआ। यह परियोजना तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद की पहल पर NTT Managed Services India Private Limited के CSR सहयोग से स्थापित की गई है। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (ABTYP) के उपाध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा, 'विज्ञान केवल एक विषय नहीं, बल्कि सोचने का एक तरीका है। यह प्रयोगशाला विद्यार्थियों में जिज्ञासा, नवाचार एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का सशक्त माध्यम बनेगी। आचार्य महाप्रज्ञ के शिक्षा एवं संस्कार आधारित जीवन-दर्शन को समर्पित यह पहल समाज के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक सार्थक कदम है।' इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में NTT Managed Services India Private Limited के Executive, Head – APAC Service Delivery, Cloud & Security चेतन कुमार मालवीय तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में Finance Controller आशीष दक उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक संसाधन एवं व्यावहारिक ज्ञान ही भविष्य के नवाचारों की मजबूत नींव हैं। विद्यालय की प्रधानाचार्या स्वरूपा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद एवं NTT Managed Services India Private Limited के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह विज्ञान प्रयोगशाला विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा उनकी वैज्ञानिक सोच को नई दिशा प्रदान करेगी। इस अवसर पर तेयुप हैदराबाद के कार्यकारी अध्यक्ष राहुल ने परिषद की ओर से स्वागत व्यक्तव्य दिया और आचार्य महाप्रज्ञ के प्रेरणादायी साहित्य भेंट कर NTT के सभी अधिकारियों एवं सदस्यों का सम्मान किया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रांजल दुगड़ ने किया। अंत में तेलंगाना MBDD प्रभारीअनिल दुगड़ ने आभार ज्ञापित करते हुए सभी अतिथियों, सहयोगियों एवं विद्यालय परिवार का धन्यवाद व्यक्त किया तथा विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएँ दीं।

मर्यादाएं तेरापंथ की प्रगति का आधार

बोलारम।

तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी का प्रवचन आयोजित हुआ। उपस्थित श्रद्धालुओं ने आध्यात्मिक वाणी का श्रवण कर धर्मलाभ प्राप्त किया।मुनि दीप कुमार जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि मर्यादाएं तेरापंथ धर्मसंघ की प्रगति और एकता का मूल आधार हैं।

आचार्य भिक्षु ने युगीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर मर्यादाओं का निर्माण किया तथा उनके उत्तरवर्ती आचार्यों ने उन्हें प्रतिष्ठित एवं पुष्ट बनाया। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी मर्यादाओं के पालन को विशेष महत्व देते हैं। उन्होंने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ का समस्त कार्य एक गुरु की आज्ञा और निर्देशन में संचालित होता है। साधु-साध्वियों का विहार, चातुर्मास तथा संघीय गतिविधियां गुरु आज्ञा के अनुरूप सम्पन्न होती हैं।

आज के समय में, जब छोटे-छोटे परिवारों में भी अनुशासन बनाए रखना कठिन हो रहा है, तब तेरापंथ धर्मसंघ अनुशासन, संगठन और समर्पण का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।

मुनि श्री ने आचार्य भिक्षु के वचनों का स्मरण कराते हुए कहा कि जो व्यक्ति आज्ञा में चलता है, वही सच्चा भक्त होता है।

केवल पूजा-अर्चना से नहीं, बल्कि आज्ञापालन से जीवन का वास्तविक कल्याण होता है। परिवारों में भी यदि सदस्य घर के मुखिया की उचित आज्ञा का पालन करें तो परिवार सुव्यवस्थित, सौहार्दपूर्ण और सुखी बन सकता है। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि मर्यादा, अनुशासन और आत्मसंयम जीवन को उत्कृष्ट बनाने के प्रमुख सूत्र हैं। व्यक्ति जितना मर्यादित जीवन जीता है, उतना ही उसका व्यक्तित्व निखरता है और समाज में सद्भाव एवं समन्वय का वातावरण निर्मित होता है।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

कांदिवली।

युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन कांदिवली में,तेरापंथ मेरा पंथ कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी श्रीजी के नमस्कार महामंत्र संघान से की गई।

स्वागत भाषण अध्यक्ष मिठालाल धाकड़ ने दिया। मंगलाचरण संगायक अशोक हिरण ने सुमधुर गीत के द्वारा किया। साध्वी प्रीयंवदाजी ने अपने उद्बोधन में कहा 'हम तेरापंथी है, लेकिन तेरापंथी है तो आपका मकसद क्या है? आपका लक्ष्य क्या है? क्या आप ये चाहते हो की मैं हिंसा करता जाऊं और उसमें मैं धर्म मानता जाऊं?मैं अधर्म की क्रिया करता जाऊं और उसी में मैं धर्म भी मान लूँ नहीं हो सकता।

हिंसा हिंसा ही है और अहिंसा अहिंसा ही है। चाहे आपने आवश्यक काम के लिए भी हिंसा की है तो भी वह हिंसा ही गिनी जाएगी।' साध्वी श्री मृदुयशा जी ने अपने वक्तव्य में शिथिलाचार साधुओं का चित्रण,दीक्षा के लिए प्रलोभन,दीक्षा दिलाने के तरीके व वर्तमान दीक्षा प्रणाली से तुलना तथा संस्था के इतिहास के बारे में बताया। सूरत से समागत प्रशिक्षक, प्रवक्ता, उपासक सुरेश कुमार जी बाफना ने तेरापंथ मेरा पंथ कार्यशाला के बारे में बताया की कार्यशालाएं व्यक्ति को जगाने के उद्देश्य से कराई जाती हैं। लोग भौतिकता की दृष्टि से जागे हुए हैं, पर अध्यात्म की दृष्टि से सोए हुए हैं। जागरण का संदेश देने मैं आचार्य महाश्रमण जी की किरण बनकर आया हूं।

यदि अब भी सो गए, तो कसूर गुरुदेव या सूर्य की किरण का नहीं, बल्कि स्वयं का होगा तथा हम जैन है तो क्यों है, तेरापंथी क्यों कहलाते हैं,दान,धर्म,कर्मके बारे में बताया व तेरापंथ ही मेरा पंथ हैं के बारे में विस्तृत जानकारी जीवन में होने वाली छोटी छोटी घटनाओं से जोड़ कर समझाया तथा उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर बहुत ही शालीनता के साथ दिये। कार्यशाला से पुर्व सभा पदाधिकारियों द्वारा सुरेश बाफना का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन व आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा मंत्री विनोद कोठारी ने किया।

'कैसे खुश रहें?' विषयक व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

साउथ हावड़ा।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ हावड़ा द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का विषय था — 'कैसे खुश रहें?' (व्यक्तित्व विकास)। इस अवसर पर मोटिवेशनल स्पीकर सुश्री पूजा रीतू बोथरा उपस्थित रहीं। इस अवसर पर उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में उपयोगी जीवन को ही खुशहाल जीवन माना गया है, जिसमें शांति, संतुष्टि, पवित्रता और आनंद हो। व्यक्ति का जितना अधिक मन शांत होगा, उतना ही वह खुश रहेगा। उपयोगी मन व्यक्ति को कम में भी संतुष्ट रहना सिखाता है। शांत मन के लिए विधायक भाव जरूरी है। विधायक भाव में व्यक्ति दुःख में भी सुख खोजता है, जबकि निषेधात्मक भाव में व्यक्ति सुख में भी दुःख खोजता है। व्यक्ति की जैसी सोच होती है, वैसा ही उसका व्यक्तित्व बन जाता है। इसलिए अपने चिंतन को स्वस्थ रखें। चिंता नहीं, चिंतन करें। 'चिंता' और 'चिता' दो शब्द हैं। चिता निर्जीव को जलाती है, जबकि चिंता सजीव को जलाती है। इसलिए व्यक्ति को कल की चिंता नहीं करनी चाहिए। वर्तमान में जीएं तो खुश रहेंगे। जब फोटो खिंचवाते हैं, उस समय चेहरे पर कितनी मुस्कान रहती है। हर समय यदि मुस्कराते रहेंगे तो जीवन खुशहाली से भर जाएगा। असीमित आकांक्षा व्यक्ति को अशांतता की ओर ले जाती है। अपरिग्रह व्यक्ति को खुशी से सरोबार कर देता है। पावनता, निर्मलता और आनंद से व्यक्ति तनावरहित रहता है। व्यक्ति हर समय सहिष्णुता का भाव रखे, छोटी-छोटी बातों में उलझे नहीं।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता सुश्री पूजा बोथरा ने खुश रहने के लिए भावुकता, जिज्ञासा वृत्ति, मैत्री, मिताहार, मित भाषण की चर्चा करते हुए गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त कर खुश रहने की कला सीखने की बात कही। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ युवक परिषद, साउथ हावड़ा के सदस्यों के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

Career Conclave 2026 को भव्य सफल आयोजन

दिल्ली।

27 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों को एक ही छत के नीचे लाकर, विद्यार्थियों को प्रवेश विशेषज्ञों से सीधे बातचीत कराने, विशेष और उभरते हुए पाठ्यक्रमों की जानकारी,विभिन्न संस्थानों की तुलना करने और व्यक्तिगत केरियर मार्गदर्शन प्रदान करने का अनूठा अवसर दिया गया। अभिभावकों ने एक ही स्थान पर शीर्ष विश्वविद्यालयों से मिलने की पारदर्शिता और सुविधा की सराहना की, जबकि विद्यार्थी अपने भविष्य को लेकर अधिक स्पष्टता और आत्मविश्वास के साथ गए। इस सार्थक पहल में TPF दिल्ली के साथ साझेदारी निभाई जैन समाज की अति प्रतिष्ठित संस्था JITO ने। रमन जैन अध्यक्ष, JITO ने टीपीएफ दिल्ली के प्रयास की सराहना करते हुए टीपीएफ अध्यक्ष कविता जी से समय समय पर साथ मिलकर कार्यक्रम आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की।

स्पंदन कार्यशाला का आयोजन

घाटकोपर।

तेरापंथ सभाभवन घाटकोपर के प्रांगण में स्पंदन कार्यशाला का सफल आयोजन हुआ। आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्री जी के पावन सानिध्य में सुख-दुख के स्पंदनों की महत्ता पर विस्तार से विमर्श हुआ। उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए विदुषी साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी ने कहा- सुख सबको प्रिय है।

दुःख कोई नहीं चाहता। भीतर में शांति व सुख के स्पंदन जगाने का उपाय खोजना है।

अध्यात्म के महान प्रवक्ता भगवान महावीर ने कहा- धर्म सब प्राणियों के लिए त्राण व शरण है। इससे एंडोर्फिन नामक रसायन स्वतः पैदा होता है, जो सुखानुभूति देता है। धर्म वह सकारात्मक भाव है, जो शुभ स्पंदन जगाता है। साध्वी डा. योगक्षेमप्रभा जी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा- हमारा जगत तरंगों का जगत है। नाना प्रकार के स्पंदन, प्रकंपन, कंपन पूरे वातावरण को प्रभावित करते हैं।

जीवन में शुभ स्पंदनों के जागरण से पारिवारिक जीवन में सुख-शांति का एहसास होता है। आध्यात्मिक उल्लास बढ़ता है। शुभ योग का विस्तार होता है। साध्वी कुंदनयशाजी, साध्वी योगक्षेमप्रभाजी, साध्वी लावण्यप्रभाजी, साध्वी मुदितप्रभाजी एवं साध्वी मधुर प्रभाजी ने मधुर गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष शांतिलाल कोठारी ने साध्वीश्री के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए सबका स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन कमलेश ढालावत ने किया। मंच संचालन तेममं मंत्री नीतू डांगी ने किया।

श्रीउत्सव का भव्य आयोजन

टिटिलागढ़।

तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा बहुत ही विशाल रूप में श्री उत्सव का भव्य आयोजन स्थानीय महावीर पंचायती धर्मशाला में किया गया। श्री उत्सव लगाने का मेन उद्देश्य महिला उद्यमियों को आगे लाना, उनकी कला को पहचान देना तथा नारी को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना है ।सर्वप्रथम आज के कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महोदया ब्रह्माकुमारी बी के मनीषा के कर कमल के द्वारा रिबन खोलकर तथा नमस्कार महामंत्र एवं मंगल पाठ से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अध्यक्ष भावना जैन ने सभी का स्वागत करते हुए बहनों का आव्हान करते हुऐ कहा बढ़े चलो स्वालंबन की ओर । आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महोदया बी के मनीषा ने कहा की ब्रह्मा प्रजापति जी ने ब्रह्माकुमारी संस्था की कमान बहनों के हाथों मे दी ।महासभा के प्रभारी भूपेंद्र जैन ने तेरापंथ महिला मंडल को असाधारण महिला मंडल बताया। ज्ञानशाला की संयोजिका कृष्णा ने बहनों को प्रोत्साहन देते ही कहा की अर्जुन की आंख की तरह तथा अंगद के पैर की तरह मजबूत इरादों के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष भूपेंद्र जैन तथा मंत्री जय जैन भी उपस्थित रहे। महिला मंडल मंत्री पूजा जैन ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारम्भ

■ **सूरत।** सेमड निवासी सूरत प्रवासी खूबिलाल राठौड़ के पुत्र सुमित राठौड़ के प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, विनीत सामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** बीदासर निवासी सूरत प्रवासी कुसुम कुमार बेगानी के सुपुत्र दीपक बेगानी के प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, विनीत सामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **सूरत।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी सूरत प्रवासी स्व. रुकमानन्द के सुपौत्र व पन्नालाल सरला देवी मालू के पुत्र-पुत्रवधू विनीत कविता व पुनीत-इंदु मालू का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, धर्मचंद सामसुखा, मनीष कुमार मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **राजलदेसर।** मांगीलाल गुलाब देवी चंडालिया के सुपुत्र अरविंद - बबीता देवी चंडालिया निवासी राजलदेसर के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश कुमार चंडालिया एवं मनोज सुराणा ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **गाँधीनगर-दिल्ली।** सुजानगढ़ निवासी दिल्ली राजगढ़ कॉलोनी प्रवासी ऋषभ कोठारी संस्कारक महेन्द्र कुमार श्यामसुखा व प्रशिक्षु संस्कारक कुलदीप बुच्चा ने पुरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से सानन्द संपादित करवाया।

■ **लाडनूं।** सुखराज-स्व. सरोज देवी जैन के सुपुत्र राजेश - जयंती जैन निवासी लाडनूं का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि के अनुसार अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण में सम्पन्न हुआ। संस्कारक बजरंग लाल डागा, बीरेंद्र बोहरा एवं राजेश कुमार चंडालिया ने मंगल मंत्रोच्चार एवं विधि-विधान के साथ सम्पूर्ण संस्कार सम्पन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** कमल - ममता सुराणा गंगाशहर निवासी के नूतन गृह प्रवेश का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा 'जैन संस्कारक' देवेन्द्र डागा और रोहित बैद ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** सरदारशहर निवासी एवं पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी सीमांत नाहटा के नूतन गृह प्रवेश के मंगल कार्यक्रम जैन संस्कारक राकेश सिंघी एवं मालचन्द भंसाली ने स्वर्णमणि कॉम्प्लेक्स, 33 A कैनल सर्कुलर रोड, ई एम बाईपास, कोलकाता 54 में सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा किया गया।

नामकरण संस्कार

■ **गंगाशहर।** हरीश -सुंदर देवी सामसुखा के पुत्र एवम पुत्रवधू विकास-पुजा सामसुखा के कन्या धन की प्राप्ति का नामकरण संस्कार उपरांत जैन संस्कार विधि से सम्पत पैलेस गंगाशहर में आयोजित हुआ। जैन संस्कारक देवेन्द्र डागा और विपिन बोथरा ने मांगलिक मंत्रोचार एवं आध्यात्मिक भजनों के संगान के साथ आयोजित करवाया ।

■ **फरीदाबाद।** काशवी - हर्ष बोरड़ के नवजात पुत्र, प्रभा - स्व. विनोद बोरड़ के पौत्र, निवासी देशनोक, प्रवासी फरीदाबाद का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा शुभराज होटल एंड बैंक्वेट्स, सेक्टर-11, फरीदाबाद में जैन संस्कारक सुशील डागा एवं मुकेश बोथरा ने मंगल मंत्रोच्चारण के साथ विधिवत संस्कार संपन्न कराया।

शिलान्यास संस्कार

■ **गंगाशहर।** नवकार निलयम भवन के निर्माण हेतु शिलान्यास संस्कार का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि द्वारा 'जैन संस्कारक' धर्मेन्द्र डाकलिया, देवेन्द्र डागा और विपिन बोथरा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार के साथ सम्पन्न करवाया।

चातुर्मास हेतु चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

अणुव्रत भवन, नई दिल्ली।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासन श्री साध्वी सुव्रतां जी ठाणा-4 झंडेवालान से विहार कर अणुव्रत भवन में आगामी चातुर्मास हेतु चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया। अणुव्रत भवन में विराजित डॉक्टर साध्वी कुंदन रेखा जी ठाणा 3 ने आपका स्वागत अभिनंदन किया। तत्पश्चात अणुव्रत भवन के प्रांगण में साध्वी श्री का स्वागत समारोह एवं आध्यात्मिक मिलन कार्यक्रम आयोजित रहा।संस्थाओं के प्रमुख एवं उपस्थित गणमान्य जनों ने मूक स्वागत अभिव्यक्ति दी। समाज भूषण मांगीलाल सेठिया, अणुव्रत न्यास के मुख्य न्यासी के सी जैन, महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष मनीष जैन ने स्वागत भावनाएं व्यक्त की। साध्वी श्री जी द्वारा गीत का संगांन किया गया, शासन श्री साध्वी सुमन प्रभा जी ने इस चातुर्मास में अधिक से अधिक धर्मोपासना व त्याग की प्रेरणा दी, शासन श्री साध्वी सुव्रतां जी ने कहा गुरुदेव के आदेशानुसार चातुर्मास प्रवास हेतु अणुव्रत भवन आ गये है साध्वी कुंदन रेखा जी ठाणा-3 के प्रति सवात्सलय अहोभाव प्रैषित किए एवं यह चातुर्मास पुरी दिल्ली का है, अतः दिल्ली का समाज व प्रत्येक सदस्य इसका लाभ लेवे। साध्वी कुंदन रेखा जी ने गीत के माध्यम से साध्वी वृंद के प्रति स्वागत के भाव प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष राजेश बैगानी ने किया एवं कार्यक्रम का कुशल संचालन विकास बोथरा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 जुलाई - 19 जुलाई 2026

युगप्रधान गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष

आचार्य तुलसी की दूरदर्शिता की यशोगाथा

● शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा ●

आचार्य तुलसी जैन समाज के एक शक्ति-संपन्न आचार्य थे। उन्होंने भगवान महावीर की वाणी को स्वीकार करते हुए आगम वाणी के आधार पर संयम-प्रधान जीवन शैली को प्रतिष्ठित किया और अणुव्रत के माध्यम से छोटी-छोटी बातों को जीवन में उतारकर जनता को शांति से रहने का संदेश दिया। उन्होंने वर्षों पहले चेतावनी देते हुए कहा था कि यह संयमहीन उपभोक्तावादी संस्कृति कहीं हिंसा का रूप न ले ले। आज हम जो देख रहे हैं, वह मानव मन की क्रूरता का ही प्रतीक है। उन्होंने अपने ज्ञानबल से जो कहा था, वह आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

सत्य की प्रयोगशाला– अणुव्रत आंदोलन इसी की ही फलश्रुति है। उस शिखर पुरुष की वचन-सिद्धि में बहुत दूरदर्शिता होती थी। उनका जो भी वचन निकला, वह हमेशा सत्य के साथ अलौकिक रहा। 'सत्यं शिवं सुंदरम्' के साथ उनका मार्गदर्शन पूरे संघ में चेतना का ऊर्ध्वारोहण बन गया।

युग बोध– उनका शासनकाल तथा उनकी प्रेरक शिक्षाएं लक्ष्य निर्धारण का विशेष समय रहा। उन्होंने न केवल सैकड़ों विद्वानों को तैयार किया, बल्कि जगह-जगह भेजकर अध्यात्म और संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाया। आज हजारों साधु-साध्वियां महावीर की वाणी की अलख जगा रहे हैं। जैन विश्वभारती यूनिवर्सिटी से सैकड़ों साध्वियां पी.एच.डी. करके विश्व के कोने-कोने में महावीर के सिद्धान्तों और अहिंसा दर्शन को पहुंचा रही हैं। इस अहिंसा दर्शन की आज बहुत बड़ी प्रासंगिकता है।

पर्यावरण विज्ञाता– उन्होंने कहा था कि धरती, हवा, पानी और वनस्पति सृष्टि-संतुलन के आधारभूत तथ्य हैं। ये जैसे हैं वैसे ही बने रहेंगे, तभी सृष्टि का संतुलन बना रह सकता है। इनमें गड़बड़ी होने से संतुलन बिगड़ने का खतरा बढ़ता है। विस्फोटक साधनों के धुएं से धरती और सूरज के बीच की ओजोन परत (छतरी) प्रभावित होती है। उसके ह्रास होने से धरती पर जीवन जीने की संभावना कम होती जाएगी। उन्होंने कहा था— इस प्राकृतिक आपदा को पैदा करने वाला भी मानव ही तो है। बढ़ती हुई खोखली इच्छाएं ही इस दुर्बलता की द्योतक हैं।

असुरक्षित संयम बढ़ाता है तनाव– मनुष्य की बढ़ती हुई खोखली इच्छाएं ही उसका संकट बनी हुई हैं। संयम का शाश्वत सिद्धान्त ही सृष्टि को सुरक्षित रख सकता है। ऐसे हिंसक वातावरण में मनुष्य कभी चैन और सुख नहीं पाएगा। आज हर व्यक्ति बेचैन है कि पता नीं कल क्या होगा।

युग परिवर्तन– परिवर्तनशील इस पांचवें आरे में आई हुई कमजोरियों से बचने के लिए उन्होंने कहा था— स्वाध्याय, ध्यान और त्याग की भावना बढ़ेगी, तभी सुख-समृद्धि बढ़ेगी तथा हर समस्या आपसे दूर रहेगी। आपने निर्जरा का सन्देश देकर मनुष्य मात्र के जीवन में संस्कारों का सृजन किया है।

अनुशासन संवारता है जीवन– अनुशासन जीवन की विशिष्ट कला है। इसके बिना जीवन अधूरा है। परिवार, समाज और व्यक्ति जब अनुशासित रहते हैं, तभी हर जगह शोभा प्राप्त करते हैं। जहां इसकी महत्ता (मूल्यवत्ता) है, वहां हर व्यक्ति सुरक्षित है। इस कलिकाल में स्वयं पर स्वयं का नियंत्रण ही सुख की शैया है।

यशस्वी कार्यशैली– गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी जी ने अपने ऊर्जा-बल से समाज को अनेक योजनाएं दीं और समय से पहले ही सचेत करते हुए कहा था कि अगर व्यक्ति का निर्माण नहीं होगा, तो परिवार और समाज भटक जाएगा। कुछ दशक पहले उन्होंने जो कहा था, आज वही घटित हो रहा है। उनका दिशाबोध आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने अनेक सभा-संस्थाओं के माध्यम से समाज कल्याण के लिए युवावर्ग को तैयार किया। उत्साह और उमंग भरकर महिला समाज को प्रगति के शिखर पर आरोहण करने का उपदेश दिया। मुमुक्षु बहनों को श्रमणी दीक्षा प्रदान कर विश्व में एक नई हलचल पैदा की। आगम-सम्पादन अपने आप में जैन समाज का बहुत बड़ा गौरव है। तीसवें महाप्रयाण के इन क्षणों में हम उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं पर चलते हुए यह महसूस करते हैं कि भले ही वे देह रूप में हमारे सामने नहीं हैं, मगर आदर्श रूप में प्रतिष्ठित उनका आभा-मण्डल हमारे लिए हमेशा प्रेरणास्रोत है। उनका आशीर्वाद सबको मिलता रहे; क्योंकि वे ऐसे पहले आचार्य हैं, जिन्होंने सम्प्रदाय-मुक्त धर्म को प्रतिपादित किया।

मानवता के मसीहा आचार्य श्री तुलसी

● प्रदीप छाजेड़, बोरावड़ ●

गुरुदेव तुलसी का जीवन हमको यह बात बताता है कि कलियुग में भी सतयुगी पुरुष आते हैं और अपनी ही लीक बनाते हैं। उनमें जनमानस के उत्थान की तड़प होती है। उनकी विसंगतियों से, समस्याओं से झड़प होती है और समाधान की राह निकलती है। उनको अपने मान,अपमान की परवाह नहीं होती। उनमें अपने गुणगान की, सम्मान आदि की भूख नहीं होती। वे मसीहा बनकर आते हैं, कितनों का उद्धार कर जाते हैं, कितनों का सुधार कर जाते हैं, मानवता का भंडार भर जाते हैं, और अंत में अमर हो जाते हैं। आचार्य श्री तुलसी बीसवीं सदी के उन विशिष्ट संतों में अग्रगण्य थे जिनकी दृष्टि केवल धर्म तक सीमित नहीं थी , बल्कि सामाजिक परिवर्तन के व्यापक आगमों को भी समेटती थी। उनका व्यक्तित्त्व बहुत बहुआयामी था।

आध्यात्मिक साधना, नैतिक जागरण और सामाजिक चेतना का अद्भुत समन्वय उनके कृतित्व में स्पष्ट दिखाई देता है । उन्होंने निरन्तर यह प्रयास किया की मनुष्य अपनी अन्तर्निहित नैतिक शक्ति की पहचानकर उसे व्यक्तिगत उत्थान तथा समाज- सुधार की दिशा में प्रयोग करें । तुलना के विष को कृतज्ञभावों से काटो यानि अपने पास जो है उसके लिए कृतज्ञता भाव रखो। उनके जीवन और कार्य ने यह सिद्ध किया हैं कि सच्ची आध्यात्मिकता व्यवहार में उतरकर ही समाज को नई दिशा प्रदान कर सकती हैं। आचार्य श्री तुलसी जैसे संत युग दृष्टा होते हैं, वे कर्मठ श्रृष्टा होते हैं। वे संतप्त सृष्टि के कष्ट निवारक अमृत वृष्टा होते हैं। गुरुदेव तुलसी हूबहू ऐसी ही विरल विभूति थे।वे भैक्षवगण के सक्षम पट्टधर संघ हृदय की अनुभूति थे।

समाजोत्थान एवं संघ विकास में समन्वय था । ऐसे संघ पुरुष को पा कर हम सभी धन्य हुए। उनके जीवन का हर पृष्ठ पौरुष की कहानी है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत-आंदोलन के माध्यम से एक अनूठी धर्मक्रांति की शुरुआत की। आज लगभग तीस वर्ष बाद भी तुलसी तो तुलसी ही थे, हम सब यह कहते है। उन्हें हमारा सादर नमन हम भी उस पथ पर सदा गमन करें।

नि:शुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जांच शिविर सम्पन्न

हावड़ा।

श्री महावीर विद्या जैन परिवार द्वारा नि:शुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। यह परिवार द्वारा पिछले सात महीनों में आयोजित छठा सेवा शिविर था, जिसमें लगभग 150 लोगों ने स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श का लाभ उठाया।

शिविर में एएसजी आई हॉस्पिटल के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने नेत्र जांच कर आवश्यक परामर्श दिया। वहीं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर की टीम ने विभिन्न स्वास्थ्य जांच सेवाएं उपलब्ध कराईं। प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य वैद्य डॉ. राधेश्याम श्रीवास्तव ने आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संबंधी परामर्श देकर अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

वहीं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के रवि दुग्गड़ ने भी शिविर को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल सरकार के मंत्री उमेश राय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मंत्री उमेश राय ने आयुर्वेद पद्धति की उपयोगिता और महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन

अहमदाबाद।

आगामी चातुर्मास के शुभ आगमन की पूर्व बेला में तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद की नवगठित कार्यसमिति के 50 से अधिक युवा एवं पदाधिकारी पूज्य साध्वी अणिमाश्री जी के श्रीचरणों में श्रद्धाभाव के साथ उपस्थित हुए।

युवकों ने साध्वीश्री के श्रीचरणों में विनम्र भाव से शाहिबाग में शीघ्र पधारने का भावपूर्ण आह्वान किया तथा आगामी चातुर्मास को आध्यात्मिक जागरण, संस्कार संवर्धन एवं युवाशक्ति के सशक्त निर्माण का प्रेरणादायी पर्व बनाने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर पूज्य साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने मंगल उद्बोधन में युवाओं को धर्म, साधना, स्वाध्याय, संयम एवं संस्कारमय जीवन अपनाने की प्रेरणा प्रदान की। आपने कहा कि चातुर्मास का प्रत्येक क्षण आत्मविकास का स्वर्णिम अवसर है। यदि युवा वर्ग इस अवधि का सदुपयोग करे तो वह अपने जीवन में आध्यात्मिक ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है। अध्यक्ष संदीप मांडोत ने अपने संबोधन में साध्वीश्री जी को नवगठित टीम , किशोर व युवा साथीयो के बारे में जानकारी दी। अपने वक्तव्य में साध्वीश्री को इस वर्ष युवा शक्ति के आध्यात्मिक विकास के लिए विशेष निवेदन किया एवं चातुर्मास में कई बड़े आयोजनों के लिए अपनी बात रखी। मंत्री हैप्पी भरसारिया ने कुशल संचालन एवं साध्वी श्री के प्रति आभार ज्ञापन करते हुए कहा कि साध्वी श्री आपके दिशा निर्देश से सभी सक्रिय कार्यकर्ता, श्रावक कार्यकता के रूप में निखर कर आएगे। संगठन मंत्री राहुल बालड़ ने अपने वक्तव्य परिषद् के सभी सदस्यों ने साध्वीश्री के मार्गदर्शन में आगामी चातुर्मास के प्रत्येक आध्यात्मिक, सामाजिक एवं संस्कारमूलक कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता निभाने तथा अधिकाधिक युवाओं को धर्मसंघ से जोड़ने का संकल्प लिया।

युगप्रधान गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष

सिरियारी

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में आचार्य गणाधिपति तुलसी का 30 वां महाप्रयाण दिवस शासन श्री मुनि मुनिव्रत स्वामीजी के सान्निध्य एवम् मुनिश्री चैतन्य कुमार ' अमन' के निर्देशन में मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में नमस्कार- महामंत्र के उच्चारण के पश्चात् जप का प्रयोग किया गया। इस अवसर पर उपस्थित संस्थान परिवार में कार्यरत स्टाफ परिवार को सम्बोधित करते हुए मुनि अमन ने कहा-आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे। वे एक धर्म सम्प्रदाय के आचार्य अवश्य थे किन्तु उनके कार्य मानव जाति के हितों से जुड़े हुएथे । अणुव्रत-प्रेक्षा ध्यान - जीवन विज्ञान जैसे अवदान मानव कल्याणकारी है। गरीब की झोपड़ी से लेकर राजनेता तक उन्होंने अपना सन्देश दिया। कहा जा सकता है कि गरीबों- असहायों के मसीहा बनकर आए। मुनि अमन ने आगे कहा-आचार्य तुलसी का भारत के स्वर्णिम युग का दस्तावेज है। आचार्य तुलसी देहरूप में आननहीं है किन्तु उनके अवदानों व कार्यों से आज भी जीवित है। महानव्यक्ति मर करभी अमरत्व का सन्देश देते रहते है। उनके 30वें महाप्रयाण दिवस पर समस्त समाधि स्थल परिवार से उनको भावभीनी श्रद्धा-जंलि अर्पित करते हुए गौरव की अनुभूति करते हैं। कामना करते है वह तुलसी युग पुनः लौटकर आए ताकि मानव जाति को कल्याण मार्ग मिलता रहे। इस अवसर पर मुनि गिरीश कुमार जी गुरुदेव तुलसी की स्मृति करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए।

अडाजण, सूरत

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ संप्रदाय के नौवें अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी की 30वीं पुण्यतिथि के पावन अवसर पर उनके सुशिष्य मुनि मदन कुमार जी ने एक अत्यंत प्रेरणादायी और विचारोत्तेजक प्रवचन दिया। श्रावक समुदाय को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा -- आचार्य श्री तुलसी एक महान जैन आचार्य थे। वे केवल किसी एक संप्रदाय के आचार्य नहीं थे बल्कि महान राष्ट्र संत थे। महान समाज सुधारक थे। उन्होंने अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए। व्यक्ति सुधार एवं व्यक्ति सुधार द्वारा समाज सुधार और राष्ट्र सुधार के उद्देश्य से उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। देश की जनता के चारित्रिक उत्थान का बीड़ा उठाया। उन्होंने वर्तमान पीढ़ी की जीवनशैली पर चिंता व्यक्त करते हुए आत्म-शुद्धि, समय नियोजन और संस्कारों को अपनाने पर विशेष बल दिया। मुनि श्री ने आज के युवाओं द्वारा देर रात तक मोबाइल का उपयोग करने पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने कहा - ज्ञान लेना हो तो मोबाइल से नहीं सत् साहित्य से लेना चाहिए। यदि जीवन में साहित्य के प्रति अनुराग (प्रेम) जागृत हो जाए, तो मोबाइल के प्रति अपने आप विराग (वैराग्य) पैदा हो जाएगा। उन्होंने आचार्य तुलसी के विराट जीवन का उल्लेख करते हुए उनके 25 खंडों में संकलित ऐतिहासिक ग्रंथ 'मेरा जीवन-दर्शन' का एकाग्रता के साथ नियमित स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा - आचार्य श्री तुलसी एक बहुआयामी और प्रयोगधर्मी संत थे, जिनका पूरा जीवन व्यावहारिक था। उनका अनुशासन, समय-नियोजन (Time Management) अत्यंत सटीक था। हमें भी उनके पदचिन्हों पर चलते हुए 'अणुव्रती' बनना चाहिए। पूरी दुनिया को शांति की अत्यंत आवश्यकता है। इसके लिए मुनि श्री ने 'प्रेक्षाध्यान' के नियमित अभ्यास और जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव (रूपांतरण) लाने की अपील की।

मुनि संयम कुमार जी ने कहा आचार्य श्री तुलसी परम पुरुषार्थी संत थे। जीवन के अंत समय तक वे साहित्य का सृजन करते रहे। आज के युवाओं को चाहिए कि वे आचार्य श्री तुलसी के साहित्य का कम से कम एक पेज प्रतिदिन जरूर पढ़ें। मुनि कल्प कुमार जी ने कहा आचार्य श्री तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को नए शिखरों पर पहुंचाया। उन्होंने समण श्रेणी, उपासक श्रेणी, ज्ञानशाला, परमार्थिक शिक्षण संस्था आदि अनेक नए उपक्रम दिए। उन्होंने आगम संपादन का दुरूह कार्य भी किया। अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य 'अणुव्रत सेवी' अर्जुन मेडतवाल ने भावपूर्ण मुक्तकों के द्वारा आचार्य श्री तुलसी के चरणों में श्रद्धा समर्पित की।

अणुव्रत भवन, नई दिल्ली

गणाधिपती पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी का तीसवां महाप्रयाण दिवस का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या शासन श्री साध्वी सुव्रंताजी ठाणा 4 के सानिध्य में अणुव्रत भवन के प्रांगण में आयोजित किया गया। साध्वी श्री ने कहा कि आकाश की ऊंचाई, पाताल की गहराई, एवं दिशाओं के विस्तार को मापना अति मुश्किल है, वैसे ही आचार्य श्री तुलसी के तेजस्वी व्यक्तित्व के संदर्भ में बताना कठिन है। उनके जीवन में 3 चीजों संघर्ष,भाग्य एवं सहयोग की प्रबलता रही। जहां जाते वहां विरोध संघर्ष भयंकर रूप से होता पर वे उसे हिले नहीं, मुड़े नहीं अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे इसलिए उनकी यश सुरभि दिग दिगंत में फैल गई। शासन श्री साध्वी सुमन प्रभा जी ने कहा गुरुदेव तुलसी दिवा स्वप्न देखने वाले ओर उसको साकार करने वाले विशाल व्यक्तित्व के पुरोधा महापुरुष थे,हम आपके बताए मार्ग का, प्रेरणा का अनुसरण करें। साध्वी कार्तिक प्रभा जी एवं साध्वी चिंतन प्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिंतन प्रभाजी ने किया।

शिरपुर

अणुव्रत अनुशास्ता गणाधिपति गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के 30 वे महाप्रयाण दिवस निमित्त शिरपुर मे 'एक शाम गुरु तुलसी के नाम' भक्ति संध्या एवं जाप का आयोजन किया गया। इस महाप्रयाण दिवस को एकासन दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें 11 एकासन हुये। भक्ति संध्या की शुरुवात सर्वप्रथम तुलसी अष्टकम से हुई। सामुहिक रूप में जाप और गुरु तुलसी पर आधारित गीतों का संगान हुआ।

युवक परिषद् की ओर से गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के जीवन पर आधारित Rapid Fire Quiz रखी गई जिसमें सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया। मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर ज्ञानशाला, महिला मंडल एवं शिरपुर सभा की उपस्तिथि रही।

शास्त्री नगर, नई दिल्ली

बहुश्रुत मुनिश्री उदित कुमार जी के पावन सान्निध्य में युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का 30वां महाप्रयाण दिवस एवं तेरापंथ सभा शास्त्री नगर का शपथ ग्रहण समारोह अत्यंत गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। तेरापंथ भवन शास्त्री नगर में आयोजित इस कार्यक्रम में श्रद्धाभिव्यक्ति करते हुए बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने कहा -आचार्य तुलसी ने तेरापंथ को एक लघु संप्रदाय के स्वरूप से उठाकर लोकप्रिय धर्मसंघ के रूप में स्थापित किया। उन्होंने युग की आवश्यकता और समय की मांग के अनुरूप धर्मसंघ में अपेक्षित संशोधनों व परिवर्तनों को सहर्ष अंगीकार किया।' मुनिश्री ने उन्हें एक 'प्रेरणास्रोत आचार्य' के रूप में अभिहित करते हुए कहा कि वे अपने प्रत्येक शिष्य की योग्यताओं को निखारने, प्रेरणा देने तथा उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करने में सदैव तत्पर रहते थे। इसी क्रम में नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजा कोठारी ने जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ से शपथ ग्रहण की। नवगठित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण के संदर्भ में मुनिश्री ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं उनकी पूरी टीम को पावन पाथेय प्रदान करते हुए प्रेरित किया कि वे समाज के सभी घटकों को साथ लेकर, सर्वसमावेशी भावना के साथ कार्य करें ताकि संगठन की व्यवस्थाओं को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके। इस मंगल प्रसंग पर समाज के अनेक प्रबुद्ध श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

यशवंतपुर

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विसर्जन दिवस के अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य, गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस को श्रद्धा, भक्ति एवं भावपूर्ण वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम साध्वी पावन प्रभा जी ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में सहकार नगर में आयोजित हुआ। साउथ जोन की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष रेखा पितलिया ने गुरुदेव श्री तुलसी के व्यक्तित्व, एवं प्रेरणादायी जीवन पर अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी पावन प्रभा जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में गुरुदेव श्री तुलसी के जीवन संबंधित कुछ बातें बताई । साध्वी रम्य प्रभा जी ने प्रश्न पूछे उपस्थित श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक प्रश्नों के उत्तर देकर कार्यक्रम को ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादाई बना दिया। अंत में साध्वी श्री जी ने गुरुदेव तुलसी का जप करवाया। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्रद्धा, प्रेरणा एवं उत्साह से परिपूर्ण रहा।

मोटेरा

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, मोटेरा में आचार्य श्री तुलसी के 30वें महाप्रयाण दिवस पर 'विनयाञ्जलि नवम गणनायक को' कार्यक्रम आयोजित हुआ। सभी संघीय सभा-संस्थाओं एवं श्रावक-समाज ने अपने आराध्य को श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित किया। अहमदाबाद महिला मंडल ने त्याग-प्रत्याख्यान के द्वारा विसर्जन के मंत्रदाता आचार्य तुलसी का महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन-दिवस' के रूप में मनाया। साध्वी अणिमाश्रीजी एवं साध्वीवृन्द की प्रेरणा से इस 30वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धालुओं ने सैकड़ों उपवास व एकासन कर तपाञ्जलि अर्पित की। साध्वी श्री अणिमाश्रीजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए कहा — 'आचार्य तुलसी लब्धिधारी सिद्धपुरुष थे, समय की धारा को मोड़ देने का अदम्य साहस उनके भीतर था। उन्होंने युग को नए उन्मेष दिए। अपने विजन व चिन्तन द्वारा युगधारा में नए प्राणों का संचार किया। उन्होंने अपने शासनकाल में अनेक ऐतिहासिक कार्य कर संघ को नई पहचान दी। उनका विरोध भी बहुत हुआ, लेकिन उन्होंने दूसरों के द्वारा कहे गए कटु वचनों को सहर्ष सहा। कटु वचनों का गरल पीकर वे युग के 'शंकर' बन गए। साध्वीश्री ने आगे कहा — 'आचार्य तुलसी का संकल्प हिमालय की तरह अडिग व अचल था। वे सिंह के समान निर्भीक थे, जो कभी किसी से डरते नहीं थे। उनके तेज के सामने बड़े-बड़े दिग्गज भी पस्त हो जाते थे। ऐसे करिश्माई व्यक्तित्व के धनी आचार्य तुलसी ने संघ में नए कीर्तिमान स्थापित किए। उनकी यशोगाथा और कीर्तिगाथा सदियों तक अनुगूँजित रहेगी।' साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने कहा— 'आचार्य तुलसी को व्यक्तित्व निर्माण की कला में महारत हासिल थी।' डॉ. साध्वी सुधाप्रभा ने विचार व्यक्त करते हुए कहा— 'आचार्य तुलसी नव-निर्माता थे। उन्होंने धर्मसंघ में नव-निर्माण किया। उनकी दूरदर्शी सोच ने तेरापंथ को शीर्ष पर प्रतिष्ठित किया। उनके व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण था; जो भी उनके सान्निध्य में आता, वह उनका अनन्य भक्त बन जाता था। साध्वी समत्वयशाजी ने सुमधुर गीत के माध्यम से अपने आराध्य को विनयाञ्जलि दी। कार्यक्रम का मंच-संचालन करते हुए साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कहा — 'आचार्य तुलसी को किसी उपमा से उपमित नहीं किया जा सकता। वे अनुपमेय व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी आँखों में सूर्य-सा तेज था तो चेहरे पर चंदा-सी शीतलता थी। इस अवसर पर सभाध्यक्ष महावीर ठेलड़िया, उपाध्यक्ष हनुमान लुंकड़, तेयुप उपाध्यक्ष अरुण दोषी तथा महिलामंडल उपाध्यक्ष सरिता लोढ़ा ने अपने भावों की श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। अखिल भारतीय महिलामंडल की सहमंत्री अदिति सेरवाणी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

संबोधि

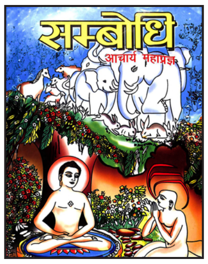

परिशिष्ट

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर

मुक्त मानस : मुक्तद्वार

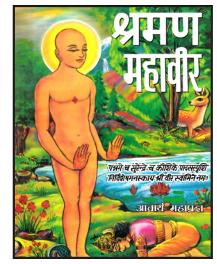

महान् योगी साधक श्रीमद् राजचन्द्र ने आत्म-दर्शन की प्रक्रिया इन शब्दों में प्रस्तुत की है— 'यह आत्मा वर्तमान शरीरप्रमाण है। शरीर में स्थिति होते हुए भी शरीर से पृथक् है, पुरुषाकार है, चिन्मय है, ऐसा समझ कर देखें तो उसका दर्शन होता है। इन्द्रियों का निरोध कर, श्वास को शांत कर, मन को संयमित कर तथा आंखें बन्द कर सुज्ञान नेत्र द्वारा देखने से यह आत्मा प्रत्यक्ष होती है।'

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि निर्विचार, निरालंबन ध्यान ही एकमात्र ध्यान है। सालंबन निरालंबन से संयुक्त होने के कारण वह भी अमान्य नहीं है, किन्तु ध्येय शुद्ध आत्मा है। साधक की दृष्टि से ध्येय विस्मृत नहीं होना चाहिए। यह सर्वदा आंखों के सामने तैरता रहे। सालंबन से निरालंबन की यात्रा पर उसे निकलना है। निरालंबन या निश्चयात्मक ध्यान पर पहुंचने के लिए कुछ प्रयोग हैं, जिनके माध्यम से सहजतया वह यात्रा सम्पन्न की जा सकती है।

आचार्य शुभचन्द्र ने अपने ध्यानशास्त्र 'ज्ञानार्णव' में एकमात्र मनोजय—मन-शुद्धि पर बल दिया है। वे कहते हैं— 'चित्त शुद्धि न कर जो केवल मुक्त होना चाहता है, वह मृगतृष्णा की नदी में पानी की इच्छा करता है।' जो साधक भेद-विज्ञान की दहलीज पर पैर रखते हैं, वे सबसे पहले मन की चंचलता का अवरोध करते हैं। मन की शुद्धि से ही निःसन्देह मनुष्यों की शुद्धि होती है। उसके अभाव में सिर्फ शरीर को पीड़ित करना व्यर्थ है। मन की शुद्धि केवल ध्यान को ही शुद्ध नहीं करती, अपितु कर्मसमूह को भी विच्छिन्न करती है। चित्तशुद्धि के अभाव में केवल ध्यान की चर्चा करने वाला मूढ़ है। मनःशुद्धि के द्वारा सब साध्य हैं। जिसका चित्त स्थिर हो गया, कलुषता से मुक्त हो गया और ज्ञान से सुवासित हो गया, उस ध्यान का साध्य सिद्ध हो गया। उसके लिए काया को कष्ट देना व्यर्थ है।

इस समग्र चर्चा का प्रतिपाद्य है—मनोजय और मनःशुद्धि। दोनों निस्संदेह कठिनतम हैं, किन्तु असाध्य नहीं हैं। साधक में साध्य प्राप्ति की अभीप्सा हो, गहन निष्ठा हो और सतत श्रमशीलता हो तो कुछ भी कठिन नहीं है। मनोजय और मनःशुद्धि दोनों के लिए दो अलग साधन पद्धतियां नहीं, बल्कि एक ही है। वह है—जागरूकता और विचार-दर्शन। जागरूकता से अशुद्धि का द्वार निरुद्ध होगा और विचार-दर्शन से क्रमशः निर्विचारता का पथ प्रशस्त होगा। यह पद्धति केवल कुछेक के लिए नहीं, अपितु सर्वत्र प्रयोज्य है। रोग सहस्रों हों, पर सबकी औषधि एक है। अध्यात्म की दृष्टि से देखें तो मुख्य रोग एक प्रमत्तता (असावधानी) ही है। उसे दूर करने पर सब बीमारियां दूर हो जाती हैं। इसलिए विवेक, अप्रमत्तता और जागरूकता पर सबने विशेष बल दिया है। अपनी समस्त वृत्तियों के प्रति सर्वदा सचेत रहना, तटस्थ भाव से देखना, यही सहज-सरल मार्ग है जो चैतन्य के साथ संयुक्त करता है।

'मनोनुशासनम्' की व्याख्या में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कुछ प्रयोग निरालंबन निर्विचार ध्यान के लिए प्रस्तुत किये हैं, जो इस प्रकार हैं–

निरालंबन ध्यान की कुछ पद्धतियां हैं। उन्हें जानने पर उसका अभ्यास सहज हो जाता है।

पहला अंग है— प्रयत्न की शिथिलता: सालंबन ध्यान में जैसे शरीर, वाणी और श्वास का प्रयत्न शिथिल कर दिया जाता है, उसी प्रकार निरालंबन ध्यान में मन का प्रयत्न भी शिथिल किया जाता है। निरालंबन ध्यान वस्तुतः अप्रयत्न की स्थिति है।

दूसरा अंग– निरभ्र आकाश की ओर टकटकी लगाकर देखते जाइए। थोड़े समय में चित्त विचारशून्य हो जायेगा।

तीसरा अंग– केवल कुम्भक का अभ्यास कीजिए। मन विचार-शून्य हो जायेगा।

चौथा अंग– मानसिक विचारों को समेट कर हृदय चक्र की ओर ले जाइए। फिर गहराई तक उतरने का अनुभव कीजिए। ऐसा करते ही चित्त विचार-शून्य हो जाएगा।

पांचवां अंग– आत्मा या चैतन्य केन्द्र की धारणा को दृढ़ कर उसके सान्निध्य का अनुभव कीजिये। वह सहज, शांत और निर्विचार हो जाएगा।

इस प्रकार अनेक पद्धतियां हैं, जिनके द्वारा निर्विचार ध्यान को सुलभ बनाया जा सकता है, किंतु उन सब में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पद्धति है—अप्रयत्न, प्रयत्न का विसर्जन, प्रवृत्ति का विसर्जन।

(क्रमशः)

'इस प्रकार जीव और पुद्गल की गति में सहायता की अपेक्षा होती है। उसकी पूर्ति जिससे होती है, वह तत्त्व धर्मास्तिकाय है।'

'भंते! अधर्मास्तिकाय की क्या अपेक्षा है?'

'चिलचिलाती धूप है। पथिक चल रहा है। एक सघन पेड़ आया। ठंडी छांह देखी और पथिक ठहर गया। उसकी स्थिति में निमित्त बनी छाया। इसी प्रकार जो स्थिति में निमित्त बनता है, वह तत्त्व अधर्मास्तिकाय है।'

'भंते! तब आकाश का क्या कार्य होगा?'

'आकाश आधार देता है, स्थिति नहीं। गति और स्थिति दोनों उसी में होते हैं।'

'भंते! फिर पुद्गलास्तिकाय क्या है?'

'इस लता पर लगे फूल को देख रहे हो?'

'भंते! हां, इसका लाल रंग देख रहा हूं।'

'इसकी विशेषता क्या है?'

'भंते! गंध।'

'यह मधुमक्खी क्यों भिनभिना रही है?'

'भंते! इसका रस लेने के लिए।'

'इसका स्पर्श कैसा है?'

'भंते! बहुत कोमल।'

'कालोदायी! जिस वस्तु में वर्ण, गंध, रस और स्पर्श होते हैं, उसे मैं पुद्गलास्तिकाय कहता हूं।'

'भंते! धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय पर कोई जीव बैठ सकता है? खड़ा रह सकता है? लेट सकता है?'

'नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। केवल पुद्गल पर ही कोई बैठ सकता है, खड़ा रह सकता है और लेट सकता है।'

भगवान का उत्तर सुन कालोदायी का संदेह दूर हो गया। वह भगवान् के पास प्रव्रजित हो गया। ये कुछ घटनाएं प्रस्तुत करती हैं मुक्त मानस और मुक्त द्वार के उन्मुक्त चित्र।

समन्वय की दिशा का उद्‌घाटन

जल और अग्नि में प्राकृतिक वैर है। दोनों एक साथ नहीं रह सकते। अग्नि उष्ण है और जल शीत। शीत उष्ण को मिटा देता है, जल अग्नि को बुझा देता है। उष्ण और शीत में कोई सम्बन्ध नहीं है? जल अग्नि को बुझा देता है, इसलिए इनमें सम्बन्ध की स्थापना कैसे की जा सकती है? जल भी पदार्थ है और अग्नि भी पदार्थ है। पदार्थ को पदार्थ के साथ संबंध नहीं होने की बात कैसे कही जा सकती है?

समस्या के दोनों तटों का पार पाने के लिए समन्वय का सेतु खोजा गया। समन्वय दो सम्बन्धों के व्यवधान को जोड़ने वाला सूत्र है। भगवान् महावीर ने उष्ण और शीत के बीच समन्वय की स्थापना की। उस सिद्धान्त के अनुसार उष्ण उष्ण ही नहीं है, वह शीत भी है और शीत शीत ही नहीं है, वह उष्ण भी है। उष्ण और शीत—दोनों सापेक्ष हैं। मक्खन को पिघलाने वाली अग्नि की ऊष्मा मक्खन के लिए उष्ण है और लोहे के लिए उतनी उष्ण नहीं है; वह अग्नि की साधारण ऊष्मा से नहीं पिघलता।

विश्व के जितने तत्त्व हैं, वे परस्पर किसी न किसी सम्बन्ध सूत्र से जुड़े हुए हैं। कोई वस्तु दूसरी वस्तु से सर्वथा सदृश नहीं है और सर्वथा विसदृश भी नहीं है। हम कुछ वस्तुओं को सदृश मानते हैं और कुछ को विसदृश। इसका हेतु वस्तु की वास्तविकता नहीं है; यह हमारी दृष्टि का अन्तर है। हम सदृशता देखना चाहते हैं तब उसे भी देख लेते हैं और विसदृशता देखना चाहते हैं तब उसे भी देख लेते हैं। वस्तु में दोनों हैं, इसलिए जिसे देखना चाहें उसका मिलना स्वाभाविक बात है।

(क्रमशः)

3 बातें ज्ञान की

– आचार्यश्री महाश्रमण

तीनों उपकारी पुरुष

उपकार भी दो प्रकार का हो सकता है— सांसारिक (लौकिक) उपकार और लोकोत्तर उपकार। कोई माता-पिता अपनी संतान को पढ़ाए-लिखाए, उसकी शादी कराए तो यह सांसारिक उपकार हो जाता है, लौकिक उपकार हो जाता है। यदि कोई माता-पिता इस बात पर ध्यान दें कि उनकी संतान में अच्छे संस्कार आएं, वह नीतिवान बने, चरित्रवान बने, अच्छा इंसान बने, साधु-संतों के संपर्क से अपनी संतान को सुसंस्कारी बनाए तो यह लोकोत्तर उपकार हो जाता है।

दूसरों का कल्याण हो सके वैसी क्षमता का भी विकास होना चाहिए। आदमी के पास कुछ होगा तभी वह किसी को कुछ दे सकेगा। जैसे किसी व्यक्ति के पास मकान है ही नहीं तो वह दूसरों को रहने के लिए कमरे कैसे देगा? किसी व्यक्ति के पास पैसा है ही नहीं तो वह दूसरों को दान कैसे देगा? धर्म के संदर्भ में भी यदि किसी साधु के पास तत्त्वज्ञान या आगमिक ज्ञान है ही नहीं, तो वह दूसरों को ज्ञान कैसे बांट सकेगा? इसलिए व्यक्ति को स्वयं को शक्ति संपन्न, सामग्री संपन्न बनने का प्रयास करना चाहिए और फिर उस शक्ति को, उस सामग्री को जितना हो सके दूसरों को वितरित करने का प्रयास करना चाहिए। किसी के पास कुछ है और देने का अवसर आने पर भी यदि वह नहीं देता है, तो वह आदमी दरिद्र कहलाता है। आचार्य भिक्षु के साहित्य में कहा गया है—

घर में धन पिण दलद्री, जिके न देवे दान।
भार भूत धन तेहनों, कोरो करे गुमांन।।

किसी व्यक्ति के पास धन होने पर भी जब कोई मांगने आता है तब वह उसे न दे, तो वह व्यक्ति दरिद्र ही होता है। उसका धन भारभूत होता है। भले ही वह अपने धन पर अहंकार कर ले मगर उसका धन किसी के उपयोग में नहीं आता है।

यह मानव जीवन बीत रहा है। पता नहीं कब हमारे इस शरीर की शक्ति और सक्षमता भी चली जाए। इसलिए जब तक शरीर सक्षम है, तब तक आदमी को स्वकल्याण और परकल्याण करने में इसका उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

तीन उत्तम पुरुष

'ठाणं' सूत्र में बताया गया है— **उत्तमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-धम्मपुरिसा, भोगपुरिसा, कम्मपुरिसा। धम्मपुरिसा अरहंता, भोगपुरिसा चक्कवट्टी, कम्मपुरिसा वासुदेवा।** (3/33)

उत्तम पुरुष तीन प्रकार के होते हैं—

धर्मपुरुष — अर्हत्भो

गपुरुष — चक्रवर्ती

कर्मपुरुष — वासुदेव

धर्म के क्षेत्र में जो उत्तम है, वह धर्मपुरुष है। भोग के क्षेत्र में जो उत्तम है, वह भोगपुरुष है और कर्म के क्षेत्र में जो उत्तम है, वह कर्मपुरुष है। पुरुष तीन प्रकार के होते हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और जघन्य पुरुष। अपने क्षेत्र में जो निम्न स्तर के हैं, वे जघन्य पुरुष होते हैं। जो बीच के स्तर के हैं, वे मध्यम पुरुष होते हैं और अपने क्षेत्र में जो बहुत उच्चकोटि के हैं, सर्वोच्च हैं, वे उत्तम पुरुष होते हैं।

उत्तम पुरुष का पहला प्रकार है— धर्मपुरुष। धर्म के क्षेत्र में उत्तम होते हैं अर्हत्। जैसे न्याय के क्षेत्र में सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश एक तरह से उत्तम व्यक्ति है, वैसे ही आध्यात्मिक जगत् में तीर्थंकर से उत्तम कोई अन्य व्यक्ति नहीं होता। प्रश्न किया गया कि तीर्थंकर उत्तम पुरुष क्यों होते हैं? अर्हत् चार घनघाती कर्मों का नाश करते हैं। यद्यपि अर्हतों की तरह चार घनघाती कर्मों को नष्ट करने वाले अनेक केवली हो सकते हैं, किन्तु तीर्थंकर इसलिए उत्तम माने गए हैं, क्योंकि वे केवलज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ धर्म के क्षेत्र में 'तीर्थ' की स्थापना भी करते हैं। जबकि सामान्य केवली तीर्थ की स्थापना नहीं करते।

एक समय और एक क्षेत्र में केवली तो अनेक हो सकते हैं, परन्तु तीर्थंकर उनमें से एक ही होते हैं। जैसे, किसी धर्मसंघ में पांच महाव्रतों का पालन साधुओं के लिए भी अनिवार्य है और आचार्य के लिए भी। परन्तु निर्णायकता की दृष्टि से, अनुशासन की दृष्टि से आचार्य ही श्रेष्ठ होते हैं, दायित्ववान होते हैं। संस्कृत साहित्य में कहा गया है— **जातौ जातौ यदुत्कृष्टं रत्नमभिधीयते।** अर्थात् अपनी-अपनी जाति में जो श्रेष्ठ होता है, उत्कृष्ट होता है, वह रत्न कहलाता है। ज्ञान के क्षेत्र में भी तीर्थंकर सर्वोच्च होते हैं, उनसे बड़ा कोई ज्ञानी नहीं होता। चारित्र के क्षेत्र में भी तीर्थंकर सर्वोच्च होते हैं, उनसे बड़ा कोई चारित्रवान नहीं हो सकता। ज्ञान और चारित्र के साथ-साथ धर्म जगत् का नेतृत्व करने वाले तीर्थंकर होते हैं। वे अधिकृत प्रवचनकार होते हैं। इसलिए उनको धर्मपुरुष कहा गया है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जुलाई 2026
सप्ताह के विशेष दिन

21 जुलाई
भगवान अरिष्टनेमि निर्वाण कल्याणक

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
13 जुलाई - 19 जुलाई 2026

युगप्रधान गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष

रोहिणी, दिल्ली

गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण दिवस शासन भी साध्वी सुमन श्री जी के सान्निध्य में गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का 30 वां महा-प्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में मनाया गया। सामूहिक जप-अनुष्ठान के पश्चात शासनश्री साध्वी सुमन श्री जी ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुये गुरुदेव श्री तुलसी अध्यात्म जगत के महासूर्य थे। उन्होंने जीवन भर मानव जाति को आलोक बांटा। वे इस युग के राजर्षि थे, देवर्षि थे ब्रह्म ऋषि थे। श्रीतुलसी मानव रत्न थे उनके प्रलम्ब कान, रोशनी से भरे युगल नयन, तेजस्वी आभामंडल और स्फूर्त गजगामिनी गति सबके आकर्षण का केन्द्र था। उनकी वाणी सिद्ध थी। जिसमें जादूई चमत्कार था। जो समाज रूढ़ियों से घिरा हुआ था उसको जगाया। अणुव्रत और नया -मोड जैसे अभियान से नारी चेतना को जगाकर पूरे समाज का कायाकल्प किया। साथ ही साध्वी समाज को विकास के अनेक अवसर प्रदान किये। राष्ट्र की समस्याओं का भी समाधान दिया। अनेक संस्मरणों और प्रसंगों को सुनकर साध्वी श्री जी ने पूरी सभा को भाव विभोर बना दिया। साध्वी सुरेखाजी ने विराट व्यक्तित्व के मधुर प्रसंगो को प्रस्तुत करते हुए गुरुदेव श्री तुलसी को मानवता का मसीहा बताया। साध्वी मधुरलताजी ने साध्वी-श्री जी द्वारा रचित सुन्दर गीत 'आसमां की गोद में छुप गया नूर वो' गीत सुनाते हुए धर्म सभा में भक्ति का दरिया बहा दिया। रोहिणी सभा के अध्यक्ष संजीव जैन ने स्वागत भाषण के साथ अपने विचार रखे। महिला मंडल की मंत्री प्रवीणा सिंघी, महासभा से रोहिणी सभा के प्रभारी कमल बेंगाणी व कमल बैगाणी ने अपने मधुरगीतों से अपने आराध्य की अभि-वन्दना की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री पराग जैन ने किया।

चेन्नई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित तेरापंथ महिला मंडल चेन्नई द्वारा युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के मंगल सानिध्य में आचार्य श्री तुलसी का 30 वां महाप्रयाण दिवस तेरापंथ भवन साहूकारपेट में आयोजित हुआ। डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ने इस अवसर पर कहा आचार्य श्री तुलसी सृजनशील आचार्य थे उन्होंने प्रतिकूलता में से अनुकूलता खोजने का प्रयास किया। मुनिश्री ने आगे कहा आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सर्वमान्य मंच जन-जन के कल्याणार्थ प्रस्तुत किया था। इसके लिए उन्होंने जन जाग्रति करते हुए एक लाख किलोमीटर की पूरे भारत में पदयात्रा की। वे एक जैनाचार्य होते हुए भी उनका जीवन मानवता के लिए पूर्ण समर्पित था। मुनिश्री ने आचार्य श्री तुलसी को विकास पुरुष के रूप में अभिव्यक्ति देते हुए कहा हुए तेरापंथ महिला मंडल एवं पूरे धर्म संघ के लिए वें विकास पुरुष के रूप में पहचाने गए। उनका विकास सूत्र था 'निज पर शासन फिर अनुशासन'। मुनिश्री ने आचार्य श्री तुलसी के कृतित्व को उजागर करते हुए मुनिवर ने कहा आचार्य श्री तुलसी ने आचार्य पद का विसर्जन करके विसर्जन का बोध पाठ सभी के सामने प्रस्तुत किया। आज के दिन हम अहंकार विसर्जन एवं धर्म संघ के विकास का संकल्प लें। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ने महाप्राण गुरुदेव गीत प्रस्तुत करते हुए आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।अध्यक्षा हेमलता नाहर ने उपस्थित धर्म परिवार का स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा । कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री वंदना पगारिया ने किया तथा सह मंत्री नम्रता सेठिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

गंगाशहर, बीकानेर

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के 30वें महाप्रयाण दिवस की उपलक्ष में आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान की ओर से त्रिदिवसीय कार्यक्रम की श्रृंखला में प्रथम दिवस का कार्यक्रम शांतिनिकेतन सेवाकेंद्र में व्यवस्थापिका साध्वी त्रिशलाकुमारी जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ, साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के मंगल संगान से प्रारम्भ इस कार्यक्रम में मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल, गंगाशहर की बहनों ने किया। अपना ओजस्वी वक्तव्य देते हुए शांतिनिकेतन सेवाकेंद्र व्यवस्थापिका साध्वी त्रिशलाकुमारी जी ने कहा कि 'गुरुदेव तुलसी युगदृष्टा थे उन्होंने सदैव अपने शिष्यों को उनकी साधना में आगे बढ़ाने के लिए सहयोग प्रदान किया, गुरुदेव तुलसी ने सिर्फ तेरापंथ को ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जैन समाज के लिए एक बहुत बड़ा उपकार किया है . गुरुदेव श्री तुलसी संत परंपरा के उज्जवल नक्षत्र थे, जीवन पर्यंत उन्होंने स्वयं के आत्मकल्याण के साथ जन जन के कल्याण के लिए अथक श्रम किया, वे आचार्य तुलसी का आचार्य काल तेरापंथ धर्मसंघ में आज तक सबसे लम्बे समय का रहा है और उनके अवदानों की श्रखला भी बहुत लम्बी रही है. सही मायने में गुरुदेव श्री तुलसी विराट व्यक्तित्व के धनी महान संत पुरुष थे.' कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी प्रभाश्री जी, साध्वी तितिक्षा श्री जी, साध्वी दीपमाला जी, साध्वी निश्चय प्रभा जी, साध्वी रश्मि प्रभा जी, साध्वी सम्यक्त्व प्रभा जी, साध्वी सोमश्री जी आदि साध्वियों ने अपने गुरुदेव की स्मृति में अपने भावों की अभिव्यक्ति गीत, कविता, मुक्तक और वक्तव्य के माध्यम से दी। कार्यक्रम का कुशल एवं प्रभावी सञ्चालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया। कार्यक्रम में आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, नैतिकता का शक्तिपीठ के अध्यक्ष गणेशमल बोथरा, निवर्तमान अध्यक्ष हंसराज डागा, मंत्री दीपक आंचलिया सहित अन्य पदाधिकारी एवं सदस्य गण उपस्थित रहे।

साहूकारपेट

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित तेरापंथ महिला मंडल चेन्नई द्वारा युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के मंगल सानिध्य में आचार्य श्री तुलसी का 30 वां महाप्रयाण दिवस तेरापंथ भवन साहूकारपेट में आयोजित हुआ। डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ने इस अवसर पर कहा आचार्य श्री तुलसी सृजनशील आचार्य थे उन्होंने प्रतिकूलता में से अनुकूलता खोजने का प्रयास किया। मुनिश्री ने आगे कहा आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सर्वमान्य मंच जन-जन के कल्याणार्थ प्रस्तुत किया था। इसके लिए उन्होंने जन जाग्रति करते हुए एक लाख किलोमीटर की पूरे भारत में पदयात्रा की। वे एक जैनाचार्य होते हुए भी उनका जीवन मानवता के लिए पूर्ण समर्पित था। मुनिश्री ने आचार्य श्री तुलसी को विकास पुरुष के रूप में अभिव्यक्ति देते हुए कहा हुए तेरापंथ महिला मंडल एवं पूरे धर्म संघ के लिए वें विकास पुरुष के रूप में पहचाने गए। उनका विकास सूत्र था 'निज पर शासन फिर अनुशासन'। मुनिश्री ने आचार्य श्री तुलसी के कृतित्व को उजागर करते हुए मुनिवर ने कहा आचार्य श्री तुलसी ने आचार्य पद का विसर्जन करके विसर्जन का बोध पाठ सभी के सामने प्रस्तुत किया। आज के दिन हम अहंकार विसर्जन एवं धर्म संघ के विकास का संकल्प लें। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ने महाप्राण गुरुदेव गीत प्रस्तुत करते हुए आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।अध्यक्षा हेमलता नाहर ने उपस्थित धर्म परिवार का स्वागत एवं अभिनंदन किया, आचार्य श्री तुलसी को विनम्र नमन अर्पित करते हुए महिला मंडल की बहनों के साथ उनके प्रेरणादायी जीवन एवं बहुआयामी अवदानों पर आधारित प्रभावशाली 'शब्द-चित्र' प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री वंदना पगारिया ने किया तथा सह मंत्री नम्रता सेठिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

विलेपार्ले, मुंबई

साध्वी राकेश कुमारी जी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के 30वें महाप्रयाण दिवस का श्रद्धा एवं भावपूर्ण वातावरण में आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी जी के नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। इसके पश्चात साध्वी विपुलयशा जी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेयूप विलेपार्ले से भूपेन्द्र डागलिया ने कविता के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। इसके उपरांत सुशील खटेड़ ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। सांताक्रूज महिला मंडल ने गीतिका के माध्यम से अपनी मनोहारी प्रस्तुति दी। विलेपार्ले महिला मंडल ने गुरुदेव तुलसी के विविध अवदानों को प्रभावशाली प्रस्तुति के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। साध्वी विपुलयशा जी ने गुरुदेव तुलसी के व्यक्तित्व के पाँच बिंदु बताए—प्रज्ञा, वात्सल्य, पराक्रम, प्रोत्साहन एवं प्रबंधन—पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने कहा कि गुरुदेव की आंतरिक प्रज्ञा सदैव जागृत रहती थी। वे वात्सल्य से परिपूर्ण थे तथा जिस कार्य का संकल्प कर लेते, अनेक बाधाओं के आने पर भी उससे पीछे नहीं हटते और उसे पूर्ण करके ही दम लेते थे। वे प्रत्येक व्यक्ति को निरंतर प्रोत्साहित करते थे तथा उनकी प्रबंधन शैली भी अत्यंत अनूठी एवं प्रेरणादायी थी। साध्वी मलयविभा जी ने कविता के माध्यम से गुरुदेव तुलसी की दूरदर्शी सोच, उच्च दृष्टि, महान भावों एवं अनुपम गुणों का भावपूर्ण गुणगान किया। आपने यह भी कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण जैसे दो अनमोल रत्न इस तेरापंथ संघ को गुरुदेव तुलसी की ही अमूल्य देन हैं। अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि उनके दीक्षा प्रदाता आचार्य तुलसी उनके जीवन की रक्तधारा एवं कण-कण में समाए हुए हैं। आपने कहा कि गुरुदेव की दृष्टि से जहाँ वात्सल्य की वर्षा होती थी, वहीं उसी दृष्टि में अनुशासन का अद्भुत संतुलन भी विद्यमान रहता था। साध्वी श्री जी ने गुरुदेव तुलसी को एक शलाका पुरुष बताते हुए कहा कि उनका जीवन तेजस्वी, ओजस्वी एवं वर्चस्वी रहा। उनका चिंतन साहित्यकारों, वैज्ञानिकों एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों के प्रबुद्धजनों के साथ निरंतर होता था। गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्र के सर्वोच्च नेतृत्व तक उनका आत्मीय संपर्क था और वे सभी की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते थे। ऐसा कोई विषय नहीं था, जिस पर गुरुदेव तुलसी ने मार्गदर्शन न दिया हो। उनकी दृष्टि में सभी समान थे; कोई बड़ा या छोटा नहीं था। सभी साध्वी श्री जी के गीतिका से कार्यक्रम का संपन्न हुआ। कार्यक्रम का कुशल एवं प्रभावी संचालन साध्वी चेतस्वी प्रभा जी ने किया। पुरे समाज सें सराहनीय उपस्थिति रही।

जयपुर

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के 30वें महाप्रयाण दिवस के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर के द्वारा में जप-तप-अभ्यर्थना कार्यक्रम का श्रद्धापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक जप एवं तप-अभ्यर्थना के साथ हुआ। उपस्थित श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण करते हुए उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। तेयुप जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने बताया कि यह आयोजन आचार्य श्री तुलसी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ-साथ उनके द्वारा स्थापित नैतिकता, मानवता एवं आध्यात्मिक मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने का एक विनम्र प्रयास है। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष प्रथम राजेन्द्र बांठिया एवं उपाध्यक्ष द्वितीय राजेश नागोरी आदि ने आचार्य श्री तुलसी के अवदान पर प्रकाश डाला तथा कुशल संयोजना में संयोजक लोकेश जैन एवं श्री अंकित जैन का श्रम उल्लेखनीय रहा। श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण से ओत-प्रोत यह आयोजन सभी उपस्थितजनों के लिए प्रेरणादायी एवं भावपूर्ण रहा। उल्लेखनीय हैं कि आचार्य तुलसी सर्किल का वर्षपर्यन्त देखरेख एवं सौन्दर्यकरण का कार्य तेयुप जयपुर के द्वारा किया जा रहा है।

युगप्रधान गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष

जसोल

प्रोफेसर डॉ. साध्वी मंगल प्रज्ञा के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी की 30 वीं वार्षिक पुण्यतिथि स्थानीय राजा चौक स्तिथ नया ओसवाल भवन, जसोल में 'श्रद्धा समर्पण समारोह' के रूप में आयोजित हुई। इस अवसर पर उपस्तिथ धर्म परिषद को सम्बोधित करते हुए प्रोफेसर डॉ. साध्वी ने कहा कि - गुरुदेव तुलसी का व्यक्तित्व समुद्र की तरह अमाप्य था, विलक्षण था। शब्दो के तराजू से अथाय गुण सागर को नही मापा जा सकता।उस चांद से संघ गगन में अनेक चितारे चमकाए, जन जन के जीवन को रोशन किया, विकास के जीवन को सोपान पर चढ़ने के लिए मोटिवेट किया। उनका साहस और मोटिवेशन पॉवर बेजोड़ था। परिस्तिथियों से कभी हार नही मानी। उनका चुम्बकीय व्यक्तित्व देश विदेश के लाखों लाखों मानव मन का आधार बना, श्रद्धा का केंद्र बना। इस अवसर पर श्रमण श्रेणी में की गई देश विदेशो की यात्रा के अनुभव साझा करते हुऐ अनेक घटना प्रसंगों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा- उस महापुरुष की निकट सान्निध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त की और उपासना का अवसर मिला, ये मेरा शौभाग्य है।लाखो लाखो जन मानस की तकदीर बदलने वाले पुण्य पुरोधा तुलसी सदेही भले ही हमारे मध्य नही है, पर उनके अवदान, प्रेरणा, मागदर्शन, अमर वरदान के रूप में हमें प्राप्त है। आवश्यकता है हमें श्रद्धा ओर समर्पण की चेतना से संघ संवर्धन में योगभूत बने। हौसले बुलंद रखें। जसोल तेरापन्थ महिला मंडल की बहिनो के मंगल श्रद्धागीत से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने कहा - आचार्य तुलसी की दिव्य दृष्टि अनुपमेय थी। उनकी पारखी दृष्टि ने अनेक व्यक्तित्वों का निर्माण किया। जागरण का संदेश दिया। जाग्रति का जीवन जिया। इस अवसर पर तेरपंथ सभा जसोल अध्यक्ष गौतमचन्द ढ़ेलडिया, जसोल ज्ञानशाला प्रभारी डूंगरचन्द सालेचा, महासभा जोधपुर आंचलिक प्रभारी गौतमचन्द सालेचा, अणुव्रत समिति मंत्री सफरु खान ने गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त किये। साध्वी सुदर्शन प्रभा जी, सुरेश डोसी, कुमारपाल संखलेचा ने गीतांजलि द्वारा अपनी श्रद्धा समर्पित की। उक्त जानकारी तेरापन्थ सभा संगठन मंत्री जयंतीलाल जीरावला ने दी कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. साध्वी राजुल प्रभा जी ने किया।

कांदिवली

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में आचार्य तुलसी का 30वां महाप्रयाण दिन 'विसर्जन दिवस' के रूप में मनाया गया। नमस्कार महामंत्र का उच्चारण साध्वी वृंद द्वारा किया गया। तारा धाकड़ ने 'तुलसी अष्टकम्' से मंगलाचरण किया। साध्वी विद्यावतीजी ने उद्बोधन में कहा- ग्यारह वर्ष की अल्पायु में दीक्षित होने वाला बालक तुलसी बाईस वर्ष की आयु में तेरापंथ के आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। उन्होंने लगभग 60 वर्ष के शासनकाल में कई महत्त्वपूर्ण अवदान दिये। समाज के लिए 'नया मोड़' का उद्घोष दिया और संपूर्ण मानव जाति के लिए अणुव्रत का संदेश दिया। अणुव्रत की मशाल लेकर आचार्य तुलसी ने चारों दिशाओं की यात्राएं की। उनके शासनकाल को स्वर्णिम शासनकाल कहा जा सकता है। साध्वी ऋद्धियशाजी ने वक्तव्य एवं साध्वी श्री मृदुयशाजी ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वी वृंद की प्रेरणा से इस दिवस के उपलक्ष में आयंबिल का उपक्रम रखा गया। 61 भाई बहिनों ने आयंबिल तप किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रेरणाश्रीजी ने कुशलता पूर्वक किया।

दादर

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासन श्री साध्वी कंचन प्रभाजी, शासन श्री साध्वी मंजु रेखाजी जी आदि ठाणा ५ के सानिध्य में दादर तेरापंथ भवन में दादर तेरापंथ सभा के निर्देशन में आयोजित किया गया। साध्वी वृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल दादर की बहिनों ने तुलसी अष्टकम का संगान तथा भक्ति भाव संपूरित गीत का संगान का मंगलाचरण किया। शासन श्री साध्वी कंचन प्रभाजी ने गुरु चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा ने एक संप्रदाय का नेतृत्व करते हुए मानव मात्र के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर नैतिकता, प्रमाणिकता प्रधान नशा मुक्त जीवन जीने का संदेश दिया। लंबी लंबी पद यात्राएँ कर जन जन से संपर्क किया। लोगो ने अनुभव किया की अणुव्रत के छोटे छोटे व्रत परिवारों में सौहार्दसेवा भाव ए सहानुभूति जागृत कर पाएंगे। शासन श्री साध्वी श्री मंजू रेखाजी ने कहा - आचार्य श्री तुलसी ने श्रमणी दीक्षा का सूत्रपात कर विदेशों में जैन धर्म का प्रचार प्रसार किया। अतिशय गौरव की बात है की आचार्य श्री तुलसी के स्वर्णिम शासन काल में तेरापंथ संघ की विशेष प्रगति हुई। विदेश में प्रवासित जैन परिवारों को प्रतिबोध प्राप्त हुआ।साध्वी उदित कुमारीजी, साध्वी निर्भय प्रभाजी व साध्वी चेलना श्री जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथी सभा दादर के अध्यक्ष अर्जुन लाल धाकड़, मंत्री पंकज चौपड़ा, डालचंद कोठारी, छोटूलाल सुराणा, सुभाष चपलोत, गणपतलाल मारू, निर्मल भंसाली, कमलेश भंसाली, विमला कोठारी आदि ने गुरु चरणों के उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी श्री की प्रेरणा से आज सामयिक को पचरंगी, दस पचखान की तीन लड़ी तथा रात्रि तिविहार चौविहार का अनेकों भाई बहनो ने प्रत्याख्यान किए। दक्षिण मुंबई के भाई बहनो ने भी साध्वी श्री की प्रेरणा से अनेकों प्रत्याख्यान किए।

साउथ हावड़ा

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी का 30 वां महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन दिवस' के रूप में तेरापंथ महिला मंडल, साउथ हावड़ा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर दीक्षार्थी सुमन बैद भी उपस्थित रही। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हर मुनिnजिनेश कुमारजी ने कहा धार्मिक जगत के इतिहास में आचार्य श्री तुलसी इन शताब्दियों का एक दुर्लभ व्यक्तित्व है। आचार्य तुलसी की जीवन गाथा भारतीय चेतना का एक अभिनव उन्मेष है। आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा, शांति के पैगम्बर, धर्म के देवता, साधना के श्लाका पुरुष और अप्रमत्तता के प्रहरी थे। । उनका जीवन विलक्षण व अनेक समवायों का पुंज था। उन्होंने मानव समाज को अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, नया मोड़, महिला जागरण, शिक्षा कला, साहित्य आदि अवदान देकर महान उपकृत किया। आचार्य तुलसी का जीवन सफलताओं की वर्णमाला था। उनका जन्म लाडनूं में हुआ। और उनका महाप्रयाण गंगाशहर में हुआ। उन्होंने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर एक नयाँ उदाहरण प्रस्तुत किया। आज उनके 30 वें महाप्रयाण दिवस को विसर्जन दिवस के रूप में मना कर अपनी श्रद्धा समर्पित करते हैं। मुनि ने आगे कहा- दीक्षा अनंत की यात्रा है। राग से विराग की यात्रा है। दीक्षार्थी सुमन बैद व तपस्वी बहनों के प्रति मंगल कामना। मुनि कुणाल कुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा के मंगलाचरण से हुआ । स्वागत भाषण तेरापंथ महिला मंडल, साउथ हावड़ा की अध्यक्ष अंजु चोरड़िया ने दिया। इस अवसर पर कलकत्ता सभा के अध्यक्ष शिखरचंद लुणावत, साउथ हावड़ा सभा के अध्यक्ष प्रकाश मालू ने अपने भावों को अभिव्यक्त किया । दीक्षार्थी सुमन बैद ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन मंत्री लक्ष्मी गिड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया । दीक्षार्थी सुमन बैद, अठाई तप करने वाली सुश्री डा.स्नेहा डागा व सुश्री खुशी जैन का सभा द्वारा सम्मान किया गया।'

राजाजीनगर

परम पूज्य गणाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के 30वें महाप्रयाण दिवस के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, राजाजीनगर के तत्वावधान में श्रद्धा, भक्ति एवं संस्कारों से ओतप्रोत 'एक शाम तुलसी के नाम' धम्म जागरण कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। धम्म जागरण का शुभारंभ सामूहिक मंगलाचरण से हुआ। तेयुप राजाजीनगर द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर समूह द्वारा विजय गीत का सामूहिक संगान किया गया। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर के अध्यक्ष राजेश देरासरिया ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित श्रद्धालुओं का आत्मीय स्वागत करते हुए कहा कि आचार्य श्री तुलसी का जीवन समर्पण, अनुशासन, नैतिकता एवं मानव कल्याण का अनुपम उदाहरण है। उनके आदर्शों का अनुसरण कर ही समाज एवं राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण किया जा सकता है। भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम द्वारा गुरुदेव के गुणगान से ओतप्रोत अनेक भावपूर्ण भजनों, जिनमें 'लाडनूं रो हीरो', 'कैसी वह कोमल काया रे महाप्राण गुरुदेव' सहित अन्य भक्तिमय प्रस्तुतियाँ शामिल थीं, सम्पूर्ण वातावरण को गुरुभक्ति से ओतप्रोत कर दिया। अशोक गांधी एवं महिला मंडल से रेणु कोठारी ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रेरणादायी प्रस्तुतियाँ रहीं। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष मदनलाल बोराणा एवं सभा मंत्री चंद्रेश मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए। मंच संचालन एवं आभार तेयुप मंत्री जयंतीलाल गांधी ने व्यक्त किया।

पर्वत पाटिया

अखिल भारतीय महिला मंडल द्वारा निर्देशित विसर्जन दिवस का आयोजन तुलसी भक्ति एकल गायन प्रतियोगिता तेरापंथ महिला मंडल पर्वत पाटिया द्वारा आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।प्रेरणा गीत की सुमधुर स्वर लहरियो के साथ मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण किया।मंडल अध्यक्ष सुमन बैद ने सभी का स्वागत करते हुए आचार्य तुलसी की अवदानों की महिमा बताई। प्रतियोगिता के निर्णायक शगुन डागा ने स्वरचित गितिका का संगान करते हुए मंडल का आभार व्यक्त किया। गायन प्रतियोगिता में सभी प्रतियोगियों ने बहुत ही सुमधुर भावपूर्ण प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री मधु झाबक ने किया कार्यक्रम में बहिनों की अच्छी उपस्थित रहे।

सेलम

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशनुसार तेरापंथ महिला मंडल, सेलम द्वारा साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आचार्य तुलसी विसर्जन दिवस श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साहपूर्वक दो चरणों में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में आचार्य तुलसी के जीवन एवं व्यक्तित्व पर आधारित प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें श्रावक-श्राविकाओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता के प्रथम चरण मे नितेश फुलफगार सपना बाफना ने First round मे प्रथम स्थान प्राप्त किया।

साध्वी सोमयशा जी एवं साध्वी सरलयशा जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में गुरुदेव तुलसी के आदर्शों को जीवन में आत्मसात करने का संदेश दिया। राष्ट्रीय ट्रस्टी नीलम सेठिया ने शासनमाता द्वारा रचित गुरुदेव तुलसी पर आधारित भावपूर्ण कविता का वाचन कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। महिला मंडल की उपाध्यक्ष शालिनी लुंकड़ ने अपने भावपूर्ण वक्तव्य में आचार्य तुलसी के आदर्शों के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुंदर संचालन निशा डूंगरवाल ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद के समाचार

पूर्वांचल-कोलकाता

तेयुप पूर्वांचल कोलकाता के सत्र 2025-26 के नव मनोनीत अध्यक्ष सिद्धार्थ दुधेड़िया एवं पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी समिती सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा उत्तर हावड़ा भवन में मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि श्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। तत्पश्चात कोलकाता के 2 परिषद तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल कोलकाता एवं उत्तर कोलकाता के शपथ ग्रहण का कार्यक्रम शुरू हुआ। दोनों परिषदों के ने निवर्तमान अध्यक्षों द्वारा नव मनोनित अध्यक्षों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता के अध्यक्ष सिद्धार्थ दुधेड़िया ने अपने पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी समिती के सदस्यों के नामो कि घोषणा की। उपाध्यक्ष-1 आशीष लिंगा, उपाध्यक्ष-2 पंकज आंचलिया, मंत्री पारस नाहटा, सहमंत्री-1 भरत नखत, सहमंत्री-2 जयंत बरडिया, कोषाध्यक्ष प्रभात चंडालिया, संगठन मंत्री विक्रम पटावरी, IPP राजीव बोथरा। शपथ ग्रहण कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी के द्वारा किया गया।

इरोड

स्थानीय तेरापन्थ भवन में साधारण सभा का आयोजन हुआ। सभा का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। सभा के अध्यक्ष मनीष जीरावला ने सभी का स्वागत करते हुए कहा मुनि रश्मि कुमारजी आदि ठाणा 2 सफलतम चातुर्मास के लिए सभी के सहयोग हेतु साधुवाद ज्ञापित किया। तेरापन्थ सभा, ट्रस्ट, महिला मण्डल , आदि का भी आभार व्यक्त किया । तेरापन्थ युवक परिषद के मंत्री जीतू पारख ने विगत वर्ष 2025 -2026 के आयोजनों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत के साथ सभी मण्डलों का आभार व्यक्त किया। युवक परिषद् का भी अपार सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया गया। कोषाध्यक्ष अर्जुन पारख ने आय व्यय का ब्योरा की प्रस्तुति के साथ सर्व सम्मति से पारित किया गया। समस्त कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा पद विसर्जन हुआ। चुनाव अधिकारी दुलीचंद पारख द्वारा चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ की गई। 2026 - 2027 अध्यक्ष पद का प्रस्ताव दिलीप डागा का ॐ अर्हम के जय घोष द्वारा सभी ने प्रस्ताव का स्वागत किया । और अध्यक्ष पद के लिए दिलीप डागा को सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुना गया। अध्यक्ष मनीष जीरावला एवं मंत्री जीतू पारख द्वारा शाल पट्टा ओढ़ा कर नव निर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत किया गया।

चेन्नई

तेरापंथ युवक परिषद चेन्नई की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह मुनिश्री डॉ. पुलकित कुमारजी एवं मुनि आदित्य कुमारजी के पावन सान्निध्य में गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल मंत्रोच्चार एवं विजय गीत के साथ हुआ। अपने प्रेरक उद्बोधन में पूज्य मुनिश्री ने सेवा, संस्कार एवं संगठन के मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए युवा शक्ति को समाज एवं धर्मसंघ के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। साथ ही उन्होंने समय के सदुपयोग, अनुशासन, समर्पण एवं टीम भावना के साथ कार्य करते हुए संगठन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का संदेश दिया। निवर्तमान अध्यक्ष विशाल सुराणा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कोमल डागा को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। तत्पश्चात अध्यक्ष श्री कोमल डागा ने अपनी कार्यकारिणी, पदाधिकारियों, प्रभारियों एवं कार्यसमिति के सदस्यों की घोषणा करते हुए सभी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री कोमल डागा ने वर्ष 2026–27 के लिए संगठन के विस्तार, अधिकाधिक युवाओं को परिषद से जोड़ने, सेवा, संस्कार एवं संगठन के विविध आयामों पर प्रभावी कार्य करने तथा प्रत्येक युवा को तेरापंथ युवक परिषद चेन्नई से जोड़ने का संकल्प व्यक्त किया। इस गरिमामयी समारोह में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय महेंद्र नाहटा एवं महासभा के पदाधिकारीगण,जैन विश्व भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय अमरचंद लुंकड़ आदि विशेष एवं गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन प्रवीण सुराणा ने किया।

मदुरै

तेरापंथ युवक परिषद्, मदुरै के वर्ष 2026–27 के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष संदीप बोकड़िया ने अपनी नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा की। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत नमस्कार महामंत्र से हुआ। निवृत्तमान अध्यक्ष विशाल घीया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष संदीप बोकड़िया को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात अध्यक्ष संदीप बोकड़िया ने नवगठित टीम को शपथ ग्रहण कराई।

कोकराझार

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कोकराझार के सत्र 2026- 2028 के लिए सर्वसम्मति से मनोनीत अध्यक्ष कन्हैयालाल चोपड़ा एवं उनकी नव गठित कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के साथ संयुक्त रूप से तेरापंथ युवक परिषद कोकराझार के सत्र 2026-2027 के लिए सर्वसम्मति से मनोनीत अध्यक्ष सुमित सेठिया एवं उनकी नव गठित कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का जैन संस्कार विधि द्वारा शपथ ग्रहण कराया गया। सभा गीत,विजय गीत एवं श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के साथ कार्यक्रम आगे बढ़ाया गया। तेरापंथ युवक परिषद से जैन संस्कार सुमित सेठिया एवं राजीव बोथरा द्वारा जैन संस्कार विधि द्वारा बड़े ही सुंदर तरीके से शपथ ग्रहण का मंगल कार्यक्रम संपन्न करवाया गया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के निवर्तमान वर्तमान अध्यक्ष से किशन लाल नाहाटा ने नव मनोनीत अध्यक्ष कन्हैयालाल चोपड़ा को शपथ-ग्रहण करवायी तेरापंथ युवक परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष संदीप गिड़िया ने परिषद के नव मनोनीत अध्यक्ष सुमित सेठिया को शपथ दिलाई।

दादर

तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा दादर एवं विक्रोली एवं तेरापंथ युवक परिषद, दादर एवं विक्रोली का संयुक्त शपथ ग्रहण समारोह एवं 'दिव्य शोधन देता है - प्रेक्षाध्यान' कार्यशाला का आयोजन किया गया। शपथ ग्रहण समारोह में शासन श्री साध्वी कंचन प्रभाजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए एक आचार्य की अनुपालना में चलने वाला हमारा ये जैन धर्म तेरापंथ जो पूरे भारत में फैला हुआ है जिसकी समर्पण, श्रदा, अनुशासन और मर्यादा निष्ठा भाव बेजोड़ है। शासन श्री साध्वी मंजू श्री जी ने कहा संगठन तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान है। तेरापंथ धर्मसंघ के कार्यकर्ता गुरु दृष्टि के आराधना करते हुए अपना समय सेवा में लगाते है। सभी साध्वियों ने 'आत्म साक्षात्कार प्रेक्षा ध्यान के द्वारा' गीत का संगान कर सभी को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन तेरापंथी सभा दादर के मंत्री पंकज चौपड़ा ने किया।

रतलाम

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रतलाम के सत्र 2026-28 का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ सभा भवन पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम महासभा से संवाहक दिलीप भंडारी, आँचलिक प्रभारी नीलेश रांका, कार्यसमिति सदस्य संजय पालरेचा व पवन भंडारी की गरिमामय उपस्थिति मे हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष विजय वोरा ने नवमनोनीत अध्यक्ष देवेंद्र मेहता को शपथ दिलवाई। तत्पश्चात देवेंद्र मेहता ने अपना व्यक्तव्य मे आगामी कार्यकाल का विजन प्रस्तुत किया व टीम की घोषणा करते हुए सभी को शपथ दिलवाई कार्यक्रम मे समाज के श्रावक ऋषभ जुबिन जैन का भारतीय जनता पार्टी मे जिला उपाध्यक्ष बनने पर अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन संजय पालरेचा व आभार ज्ञापन संगठन मंत्री हेमंत दख ने किया।

जसोल

अणुव्रत समिति जसोल की साधारण सभा का आयोजन पुराणा ओसवाल जसोल में अध्यक्ष महावीर चंद सालेचा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस साधारण सभा मे कई नये प्रस्ताव सहित नैतिकता, सद्भावना व नशा मुक्ति अभियान को जन जन तक पहुंचाने का आह्वान किया गया। पुराना ओसवाल सभा भवन में अध्यक्ष महावीरचंद सालेचा की अध्यक्षता में जसोल अणुव्रत समिति जसोल की साधारण सभा मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी व पूर्व सरपंच भंवरलाल भन्साली, विशिष्ट अतिथि श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष हनुमानचन्द भंसाली, वरिष्ठ अणुव्रती ईश्वरचंद इन्दा के मुख्य आतिथ्य में आयोजित की गई।

अणुव्रत समिति की महिला सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीतिका 'संयम मय जीवन हो,,,,,' का संगान किया। निवर्तमान अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने अणुव्रत आचार सहिंता का वाचन किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष महावीर चंद सालेचा ने प्रस्तुति दी।अणुव्रत कैलेंडर बालोतरा जिलाधीश महोदय सुशीलकुमार यादव, पुलिस अधीक्षक रमेशकुमार (IPS), नगर पालिका जसोल ईओ जयप्रकाश डाउकीया , CMHO वंकाराम पटेल, थाना अधिकारी शारदा विश्नोई आदि को 2026 का अणुव्रत कैलेंडर, जीवन विज्ञान योग प्रशिक्षक डायरी सप्रेम भेंट कर व अणुव्रत दुपट्टा पहिनाकर बहुमान किया एवं नशा नहीं करने व कराने का संकल्प दिराया गया तथा कैलेंडर को अपने कार्यलय में लगाने का निवेदन किया गया। महिला मण्डल अध्यक्ष ममता गाँधी मेहता ने धन्यवाद ज्ञापित किया व कोमल कंकु चोपड़ा ने सभी के प्रति आभार प्रगट किया। सभा में विशेष रूप से उपस्थित रहे शांतिलाल डोसी, नरेश सुराणा, नरेश देवासी सहित उपस्तिथ थे। कार्यक्रम में निज पर शासन-फिर अनुशासन। संयम ही जीवन है, अहिंसक चेतना का जागरण हो -नैतिक मूल्यों का विकास हो, नशा नाश का द्वार आदि नारे लगाए गये। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री सफरू खान ने किया।

राजराजेश्वरी नगर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राजराजेश्वरी नगर के कार्यकारी वर्ष 2026–28 की प्रथम कार्यसमिति बैठक सभाध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। पूर्व अध्यक्ष मनोज डागा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। निवर्तमान अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने वर्तमान अध्यक्ष को दायित्व हस्तांतरण करते हुए सफल कार्यकाल हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की। अध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ ने परम पूज्य गुरुदेव के प्रति संतों का चातुर्मास प्रदान करने हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने संगठन की भावी कार्ययोजना, सेवा, समर्पण एवं सामूहिक सहभागिता पर प्रेरक उद्बोधन दिया। उन्होंने बताया कि 19 जुलाई 2026 को मुनि आकाश कुमार जी एवं मुनि हितेन्द्र कुमार जी का चातुर्मासिक प्रवेश प्रस्तावित है।

क्षेत्र में दिवंगत नीरज लोढ़ा एवं अन्य सभी दिवंगत आत्माओं के उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना हेतु लोगस्स का सामूहिक पाठ किया गया। जिसमें अच्छी संख्या में कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। बैठक का कुशल संचालन सभा मंत्री अमित नौलखा ने किया तथा आभार ज्ञापन सहमंत्री मनोज बैद ने किया।

तेयुप पदाधिकारियों ने ली शपथ

मण्डिया।

तेरापंथ युवक परिषद् मण्डिया के सत्र 2026-27 की टीम का शपथ ग्रहण समारोह मुनि विनीत कुमार जी मुनि ठाणा-2 एवं आकाश कुमार जी मुनि ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन गांधीनगर बैंगलुरू में आयोजित हुआ। मण्डिया तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश गोखरू ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष नेमी कुमार सेठीया को शपथ दिलाई। नेमी कुमार ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए पदाधिकारियों मे उपाध्यक्ष प्रवीण कुमार दक, दिलीप भंसाली, मंत्री नवीन बोहरा, सहमंत्री जितेंद्र भंसाली, अंकित बुरड़,कोषाध्यक्ष पिन्टु धींग, संगठनमंत्री चिराग गोखरू, निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश कुमार गोखरू को शपथ दिलाई। इस अवसर पर तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष प्रकाश लोढा,अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी, महिला मंडल राष्ट्रीय सहमंत्री मधु कटारिया, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा की गरिमामय उपस्थिति रही। पवन मांडोत एवं रोहित कोठारी ने संघ के आयामों को लेकर विचार व्यक्त किए एवं नवमनोनीत टीम के प्रति शुभकामनायें व्यक्त की। मुनि विनीत कुमार जी मुनि आकाश कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि श्रावकत्व को निभाते हुए स्वयं के संस्कारों एवं संस्कृति की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना है। शपथ का मूल मंत्र ही संघ की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए कार्य करना है। संचालन मण्डिया शाखा प्रभारी विकास बाँठिया ने किया।

स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन

जयपुर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर एवं मिलिट्री हॉस्पिटल, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में जेसीबी महिंद्रा सेज, जयपुर परिसर में भव्य स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

मानवता की सेवा एवं रक्तदान के प्रति जनजागृति के उद्देश्य से आयोजित इस शिविर में बड़ी संख्या में रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। जेसीबी की चार विंग में रक्त संग्रहण का कार्य एसएमएस ब्लड बैंक, मिलिट्री हॉस्पिटल ब्लड बैंक, इटरनल हार्ट केयर हॉस्पिटल ब्लड बैंक एवं आर्य ब्लड बैंक की टीमों के संयुक्त प्रयास से कुल 427 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया, जो जरूरतमंद मरीजों के लिए जीवनदायिनी साबित होगा। कार्यक्रम के दौरान जेसीबी महिंद्रा सेज की प्रबंधन टीम का तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर की ओर से पचरंगा ओढ़ाकर एवं साहित्य भेंट कर स्वागत-अभिनंदन किया गया।

तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने बताया कि रक्तदान शिविर का वातावरण सेवा, समर्पण एवं मानवता के भावों से ओत-प्रोत रहा। परिषद द्वारा आयोजित इस सेवा अभियान में रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाकर मानवता के प्रति अपनी संवेदनशीलता का परिचय दिया।

उन्होंने सभी रक्तदाताओं, जेसीबी महिंद्रा सेज प्रबंधन तथा ब्लड बैंक टीमों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि एक यूनिट रक्त कई लोगों को नया जीवन प्रदान कर सकता है। रक्तदान शिविर को सफल बनाने में एमबीडीडी समन्वयक करण नाहटा, संयोजक प्रवीण बोथरा, सहसंयोजक मोहित तातेड़ एवं हर्ष श्यामसुखा का उल्लेखनीय योगदान रहा।

तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

उत्तर हावड़ा।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सानिध्य में तेरापंथ : मेरापंथ कार्यशाला का सफल आयोजन उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया।

कार्यशाला में मुख्य प्रवक्ता सूर्यप्रकाश सामसुखा (राष्ट्रीय संयोजकः उपासक श्रेणी) थे। कार्यशाला में लगभग 225 व्यक्तियों ने संभागिता दर्ज की। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा - आचार्य भिक्षु ऊर्जा के महान स्रोत थे। वे आत्मोदय के उत्प्रेरक थे। वे सत्य के पुजारी, अलौकिक चेतना के धनी, महान संत व तेजस्वी आचार्य थे। उनका जीवन संघर्षों से ओतप्रोत था। वे संघर्षों की आंधी में भी चट्टान की तरह सत्य पर अडिग रहे। वे क्रांतचेता युग पुरुष थे। उन्होंने तत्कालीन धर्म क्षेत्र में शिथिलता के प्रति क्रांति का शंखनाद किया। उनकी धर्मक्रांति आचार, विचार व अनुशासन गत थी। उनकी धर्मक्रांति ही तेरापंथ के रूप में विख्यात हुई।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष में भिक्षु विचार दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए तेरापंथः मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन सभा द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यशाला के माध्यम से सभी आचार्य भिक्षु के विचारों से परिचित होकर और अधिक आस्थाशील बनें। प्रवक्ता सूर्यप्रकाश जी ने भी अच्छे ढंग से प्रशिक्षण दिया ये साधुवाद के पात्र हैं।

मुनिश्री ने उपस्थित धर्मसभा को दान विषय पर विस्तार से जानकारी प्रदान की। मुनि कुणाल कुमार जी के सुमधुर संगान से कार्यक्रम का मंगलाचाण हुआ।

स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संदीप डागा ने दिया। अतिथि परिचय उपासक सुशील जी बाफना ने दिया। इस अवसर पर मुख्य प्रवक्ता सूर्यप्रकाश सामसुखा ने धर्म की पांच कसौटियां पर विस्तार से प्रकाश डाला। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री विनीत कोठारी ने किया।

बोलती किताब

मर्यादा का मर्म

मर्यादा संगठन की शक्ति है और विनय उसकी आत्मा

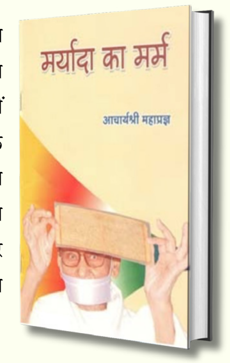

मर्यादा किसी भी संगठन की आधारशिला होती है। उसके बिना कोई भी संस्था मजबूत, संगठित और प्रभावशाली नहीं बन सकती। मर्यादा केवल नियमों और अनुशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह संगठन के भीतर एकता, समन्वय और पारस्परिक विश्वास की भावना को भी सुदृढ़ बनाती है। जब किसी संगठन के सदस्य मर्यादा को समझते हैं और उसे अपने जीवन का हिस्सा बना लेते हैं, तब वह संगठन दीर्घकाल तक स्थिर और सफल बना रहता है। इसलिए मर्यादा को केवल एक नियम नहीं, बल्कि संगठन की जीवन-रेखा माना जाता है।

मर्यादा से भी अधिक महत्वपूर्ण है उन व्यक्तियों की चेतना को जाग्रत करना जो मर्यादा का पालन करते हैं। जब व्यक्ति यह अनुभव करता है कि मर्यादा का पालन करना उसके अपने हित, समाज के हित और संघ के विकास के लिए आवश्यक है, तभी वह उसे सच्चे मन से स्वीकार करता है। ऐसी जागरूकता संगठन को भीतर से मजबूत बनाती है। मर्यादा तब केवल बाहरी नियम नहीं रहती, बल्कि वह व्यक्ति के आचरण और सोच का हिस्सा बन जाती है और संगठन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती है।

आचार्यश्री भिक्षु ने केवल मर्यादाओं का निर्माण ही नहीं किया, बल्कि उनके पालन की चेतना को भी जागृत किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि संगठन के प्रासाद का मुख्य स्तंभ मर्यादा है और उसकी मजबूत नींव विनय तथा विनम्रता है। उनकी दूरदर्शिता और सूझबूझ के कारण तेरापंथ संघ में अनुशासन, विनय और मर्यादा की एक सुदृढ़ परंपरा स्थापित हुई। बाद के सभी आचार्यों तथा साधु-साध्वियों ने इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उसके महत्व को और अधिक बढ़ाया। विशेष रूप से जयाचार्यश्री और आचार्यश्री तुलसी का योगदान इस परंपरा के विकास में अत्यंत उल्लेखनीय रहा है।

मर्यादा महोत्सव जैसे अवसर हमें अपने इतिहास, आदर्शों और परंपराओं को स्मरण करने का अवसर प्रदान करते हैं। यह अवसर केवल उत्सव मनाने का नहीं, बल्कि आत्मचिंतन करने का भी होता है। आचार्य भिक्षु और अन्य महान आचार्यों के आदर्शों को स्मरण करते हुए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम मर्यादा, विनय और अनुशासन की इस गौरवशाली परंपरा को सदैव बनाए रखेंगे। जब हम इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं, तभी संघ सशक्त, संगठित और चिरस्थायी बन सकता है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

वार्षिक कार्यक्रमों के फोल्डर का विमोचन

जयपुर।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में लाडनूं स्थित प्रवास स्थल पर तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर द्वारा सत्र 2026-27 में वर्षभर आयोजित किए जाने वाले संभावित कार्यक्रमों के फोल्डर का भव्य विमोचन किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने परिषद को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए धर्मसंघ की प्रभावना तथा सेवा, संस्कार एवं संगठन की भावना को और अधिक सशक्त बनाने की प्रेरणा दी। तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने परिषद की कार्यसमिति का परिचय करवाते हुए वर्षभर आयोजित किए जाने वाले सेवा, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं संगठनात्मक कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम के प्रायोजक गुलाब कौशल्या चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रधान ट्रस्टी एवं शासनसेवी डॉ. नरेश मेहता ने आचार्यप्रवर के समक्ष तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर का परिचय प्रस्तुत करते हुए परिषद द्वारा संचालित विभिन्न सेवा एवं सामाजिक गतिविधियों की जानकारी दी तथा परिषद के कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम की आयोजना में समन्वयक गौतम बरड़िया, संयोजक मोहित गधैया, रोनक बोकड़िया सहित अन्य तेयुप साथियों की उल्लेखनीय सहभागिता रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 जुलाई - 19 जुलाई 2026

सामने शराफत, पीठ पीछे सियासत; मुखौटा पहनकर जीने वाले ही दुरात्मा हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में पूज्य प्रवर ने परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा के भेद को किया स्पष्ट; गुरु की कठोर उलाहना को भी समता से सहने की दी प्रेरणा

लाडनूं।
02 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में चतुर्विध धर्मसंघ को ''महान ऋषियों का करें अनुकरण'' विषय पर पावन संबोध प्रदान किया।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि संसार में मनुष्य रूप में जन्म लेने वाली आत्माओं को चार भागों में बाँटा जा सकता है—परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा। चार प्रकार की आत्माओं का भेद स्पष्ट करते हुए गुरुदेव ने फरमाया।

१. परमात्मा : जो आत्मा परम अवस्था को प्राप्त हो गई है, जैसे सिद्ध भगवान, वे परमात्मा हैं। सिद्ध भगवंतों में सर्वोच्च निर्मलता होती है। वहाँ जन्म-मरण, रोग-शोक, व्याधि, राग-द्वेष कुछ नहीं होता, वे शुद्ध ज्योतिर्मय और आठों कर्मों से मुक्त हैं। केवल ज्ञानी व तीर्थंकर अवस्था को भी एक सीमा तक परमात्मा माना जा सकता है।

२. महात्मा : जो संत, ऋषि और

साधक निर्ग्रन्थता को प्राप्त हैं। सामान्य भाषा में, जिनके जो मन में है, वही वाणी और आचरण में होता है।

३. सदात्मा : लोगों के लिए महात्मा या साधु बनना मुश्किल है, वे सदात्मा अर्थात सज्जन आदमी बन सकते हैं।

४. दुरात्मा : इसके विपरीत जिनके मन, वाणी और आचरण में अंतर होता है तथा जो हिंसा, हत्या, लूटपाट, चोरी आदि पाप करते हैं, वे दुरात्मा हैं।

महात्मा न बन पाने वाले जीवों के लिए 'सदात्मा' (सज्जन) की ३ पहचानः

यदि किसी के लिए महात्मा बनना मुश्किल है, तो वह सदात्मा अर्थात सज्जन आदमी बन सकता है जिसकी ३ पहचान हैं।

१. विद्या का उपयोग : दुर्जन विद्या का प्रयोग विवाद के लिए करता है, जबकि सज्जन इसे ज्ञान मानकर दूसरों में बाँटता है।

२. धन का सदुपयोग : दुर्जन धन का अहंकार करता है, जबकि सज्जन

> सारे दुखों, डिप्रेशन और राग-द्वेष से फ्री होना ही 'परमात्मा' बनना है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

व्यक्ति दान करता है और उत्कृष्ट भावना से संतों को गोचरी बहराता है।

३. शक्ति का उद्देश्य : दुर्जन अपनी शक्ति का दुरुपयोग दूसरों को सताने में करता है, जबकि सज्जन शक्ति का उपयोग दूसरों की रक्षा में करता है।

साधु से भूल हो तो समय रहते संभलना जरूरी : आचार्य भिक्षु का आचरण ही आदर्श

आगम के आलोक में शांतिदूत ने फरमाया कि महान यशस्वी ऋषियों द्वारा किया गया श्रेष्ठ आचरण ही वास्तविक मार्ग है। आचरण सामान्य आदमी भी करता है, पर ऋषियों का आचरण आदर्श होता है। साधु से गलती भी हो सकती है, पर समय रहते यदि वह संभल जाए तो अच्छी बात है। गुरुदेव ने आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्होंने जीवन में घोर परीषहों और प्रतिकूल परिस्थितियों को समता से सहन किया, उनका आचरण ही हमारा आदर्श है।

सच्चे साधक के लिए विवेक और सहिष्णुता के नियम–

१. विविक्त स्थान का सेवन : जीवों की रक्षा करने वाले साधु को हमेशा एकांत और विविक्त स्थानों का सेवन करना चाहिए, जहाँ पशुओं या भिन्न लिंगियों का वास न हो।

२. कष्टों में समभाव : मार्ग के शारीरिक कष्टों, ऊबड़-खाबड़ रास्तों और किसी के भी कठोर वचनों को समता से सहें। भाषा में भीतर की भावना का ज्यादा महत्व होता है, अतः कोई आक्रोश में भी बोले तो सहन करें।

३. गुरु की उलाहना का आदर : कई बार गुरु से कठोर उलाहना भी मिल जाए तो उसे भी सहन करें, अपनी भूल का परिष्कार करें और भीतर सहिष्णुता का विकास करें।

'ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा, यह दुनिया रैन बसेरा' : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में गूंजा 'अमन और अकिंचन' का दिव्य संदेश—सकिंचन केवल तिजोरी का मालिक होता है, पर सब कुछ त्यागने वाला बनता है तीन लोक का स्वामी

लाडनूं।
01 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'अमन और अकिंचन रहे' विषय पर पावन प्रतिबोध प्रदान किया।

आचार्यश्री ने फरमाया कि साधना शील व्यक्ति के चारित्र की गरिमा आगम के स्वाध्याय से ही पुष्ट होती है। शास्त्र का निर्देश है कि साधु पूरी तरह ममता रहित (अमन) और परिग्रह रहित (अकिंचन) रहे। साधु को अपने शरीर से भी मोह नहीं होना चाहिए, क्योंकि ज्ञान, दर्शन और चारित्र के अलावा इस संसार में आत्मा का अपना कुछ भी नहीं है।

आचार्यप्रवर ने गृहस्थ और साधु के चिंतन के अंतर को स्पष्ट करते हुए तीन धाराएं बताईं–

> परिग्रह ले जाता है पतन की ओर, अपरिग्रह की साधना ही जीवन का असली हीरा
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. गृहस्थ की सोच : अति परिग्रह की भावना के कारण संसारी जीव की भाषा होती है कि—'मेरा है सो मेरा, तेरा सो भी मेरा'।

२. साधु की उदारता : साधना के मार्ग पर बढ़े हुए साधक का चिंतन होता है कि—'तेरा सो तो तेरा, मेरा सो भी तेरा'।

३. सर्वोच्च परमार्थ सत्य : उच्च कोटि के महर्षि की भाषा होती है—'ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा, यह दुनिया रैन बसेरा', क्योंकि जो कुछ है सब यहीं छोड़कर जाना है।

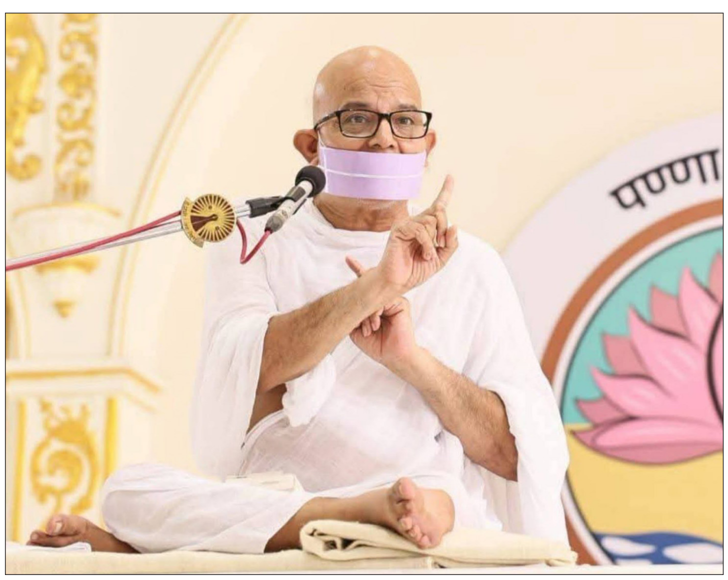

अकिंचन ही होता है तीनों लोकों का स्वामी : गुरुदेव ने अकिंचन (जिसके पास कुछ न हो) और सकिंचन (जो संग्रह करता है) के भेद को समझाते हुए फरमाया कि सकिंचन व्यक्ति केवल उतने ही हिस्से का मालिक होता है जितना धन-वैभव उसके पास है। इसके विपरीत, जिसने सब कुछ छोड़ दिया और पूर्ण अपरिग्रही बन गया, वह एक दृष्टि से पूरी दुनिया का मालिक यानी तीन लोक का स्वामी हो जाता है। परिग्रह साधु को हमेशा पतन की ओर ले जाता है, जबकि अपरिग्रह की साधना एक कंचन (हीरा) है।

आगम के आलोक में गुरुदेव ने सच्चे साधक के अनिवार्य लक्षण बताए–

१. परमार्थ पदों में रमण : साधु को हमेशा सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र के परमार्थ पदों में ही लीन रहना चाहिए।

२.छिन्न शोक (शोक से मुक्ति): साधक को कर्मों के आगमन (आस्रवों) को रोकने वाला होना चाहिए। संसार पक्ष के माता-पिता या सगे-संबंधियों की मृत्यु पर भी साधु के मन में शोक नहीं होना चाहिए।

३.संयम के प्रति अविचल निष्ठाः असंयम के प्रति आकर्षण को पूरी तरह नष्ट कर, रुपये-पैसों के मोह से दूर रहकर साधु को केवल वही कार्य करना चाहिए जिससे उसकी आत्मा का परम हित हो।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

महाप्रयाण

समाधि-मृत्यु की कुछ विशेषताएं होती हैं। आचार्य भिक्षु लेटे हुए थे। साधुओं ने प्रार्थना की– आप चाहें तो बिठा दें। उन्होंने स्वीकृति दी। साधुओं ने सहारा देकर उन्हें बिठाया। वे जिनमुद्रा-पद्मासन की मुद्रा में बैठे। जब वे पद्मासन की अवस्था में बैठे थे तब पूर्ण स्वस्थ, समाधिस्थ प्रतीत हो रहे थे। वे ध्यानमग्न थे। साधु-साध्वियां, श्रावक और श्राविकाएं उनके चारों ओर उपासना की मुद्रा में बैठे थे।

दर्जी आकर बोले– हमारा काम पूरा हो गया है, बैकुण्ठी तैयार है। उन्होंने सूईयां अपनी पगड़ियों में खोंसी। तत्काल ध्यान-मुद्रा में बैठे आचार्य भिक्षु महाप्रयाण कर गए। मुनिश्री वेणीरामजी ने इसका आंखों देखा वर्णन इन शब्दों में चित्रित किया है–

'बैठा हुआ तिण अवसरे, ध्यान आसन श्रीकार।
जाणै के जिणजी विराजिया, न जाणी असाता लिगार।।
तेरे खंडी त्यारी हुई, जाणक देव विमान।
तंतो तंत इसड़ो मिल्यो, पूज बैठाइ छोड्या प्राण।।'

आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण संवत् 1803, भाद्रव शुक्ला 13, मंगलवार, दिन का तीसरा प्रहर, 77 वर्ष की अवस्था में हुआ।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

चार तीर्थ

भारतीय ऋषि परंपरा में तीर्थ का बड़ा महत्त्व है। तीर्थ को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि जो संसार सागर से तरने के लिए माध्यम हो, योगभूत हो वह तीर्थ है। तीर्थ दो प्रकार के होते हैं– 1. जंगम, 2. स्थावर।

स्थावर तीर्थ वह होता है जो स्थिर होता है यथा मंदिर आदि। जहाँ श्रद्धालुओं को ही जाना पड़ता है। भारत वर्ष में ऐसे हजारों-हजारों तीर्थ विद्यमान हैं और भी निर्माण हो रहे हैं।

जंगम तीर्थ की उपमा महाव्रतधारी साधु को दी गई है क्योंकि साधु एक स्थान पर ज्यादा नहीं रहते। वे लोक कल्याणार्थ विचरण करते रहते हैं। तिन्नाणं-तारयाणं के पथ पर अग्रसर रहते हैं। स्व-पर के कल्याण के लिए संकल्पबद्ध होते हैं। उनका उसमें निजी स्वार्थ नहीं होता, वे परमार्थ की भावना से इस कार्य में प्रवृत्त रहते हैं, अतः वे जंगम तीर्थ कहलाते हैं।

जैन दर्शन में वैसे तो चार तीर्थ माने गए हैं– साधु, साध्वी, श्रावक व श्राविका।

साधु-साध्वी साधना पथ पर प्रवृत्त हो गए हैं, श्रावक-श्राविका भी साधना पथ पर अग्रसर हों यही काम्य है।

क्या आप जानते हैं?

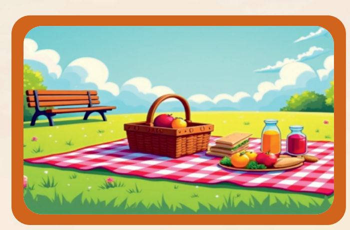

साबुदाणा व उससे निष्पन्न वस्तुएं गोचरी में अग्राह्य हैं।

साप्ताहिक प्रेरणा

''नवकार महामंत्र''
की एक माला फेरें।।

डिग्रियां तो बस कागज का टुकड़ा हैं, असली गहना ऊंचा चरित्र : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान पार्श्वनाथ की अद्भुत महिमा और केशी कुमार श्रमण के दिव्य साधुत्व का गूंजा प्रसंग; पूज्यप्रवर ने ज्ञान के साथ आचार को बताया परम आवश्यक

लाडनूं।
06 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशास्ता, शांतिदूत युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को 'विद्या और आचार के पारगामीः आचार्य कुमार श्रमण केशी' विषय पर अमृत देशना प्रदान की। उत्तरज्झयणाणि आगम के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि अध्यात्म की साधना की दृष्टि से ज्ञान और चरित्र का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। पूज्य प्रवर ने जीवन को पवित्र बनाने का पाथेय देते हुए फरमाया कि विद्या में पारंगत होना अपने आप में बड़ी बात है, पर चारित्रवान होना बहुत बड़ी बात है। चारित्रवान भी हो और साथ में ज्ञानवान और तत्त्ववेत्ता हो तो वह और भी अच्छी बात हो जाती है। जिसका चारित्र अच्छा होता है उसकी मुक्ति सुनिश्चित है।

वर्तमान अवसर्पिणी काल और तीर्थंकर व्यवस्था : आचार्यश्री ने काल चक्र की व्यवस्था और तीर्थंकरों के इतिहास को स्पष्ट करते हुए निम्नलिखित मुख्य बिंदु समझाए।

१. तीर्थंकरों की व्यवस्था : जम्बू द्वीप के इस भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में २४ तीर्थंकर हो चुके हैं और २४ ही तीर्थंकरों की व्यवस्था है।

२. वर्तमान में अभाव : अब हजारों वर्षों तक इस अवसर्पिणी काल में कोई नए तीर्थंकर होने वाले नहीं हैं। इसलिए वर्तमान में तीर्थंकरों का अभाव है।

३. प्रथम व अंतिम तीर्थंकर : इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। भगवान महावीर से अनंतर पूर्ववर्ती अर्थात् तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्व हुए।

भगवान पार्श्वनाथ की गरिमा और शिष्य परंपरा : तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की अद्भुत महिमा और उनकी परंपरा का उल्लेख करते हुए पूज्यप्रवर ने बताया।

१. लोक पूजित और पुरूषादानीय : आगम में भगवान पार्श्व के लिए कहा गया है कि वे अर्हत् थे, वीतराग थे और लोक पूजित थे। 'लोक पूजित' विशेषण भगवान पार्श्व की मानो अतिरिक्त गरिमा को प्रकट करने वाला हो सकता है। उनके लिए 'पुरूषादानीय' शब्द भी आता है, जो मानो उनकी लोकप्रियता का द्योतक है।

२. स्त्रोत और मंदिर : सबसे अधिक स्त्रोत और मंत्र भगवान पार्श्व के प्राप्त हैं और सबसे अधिक मंदिर भी संभवतः भगवान पार्श्वनाथ के ही हैं। वे धर्म तीर्थंकर थे।

> विद्या की सार्थकता तभी है जब वह जीवन में विनम्रता और पवित्र आचरण बनकर प्रकट हो
> –आचार्यश्री महाश्रमण

३. परंपरा का अस्तित्व : भगवान पार्श्व की अपनी शिष्य परंपरा थी और भगवान महावीर के समय भी भगवान पार्श्व की परंपरा के शिष्य विद्यमान थे, ऐसा आगमों में उल्लेख मिलता है। भगवान पार्श्व लोक प्रदीप और ज्ञान का प्रकाश करने वाले थे।

आचार्य कुमार श्रमण केशीः विद्या और आचार के पारगामीः भगवान पार्श्व की परंपरा के महायशस्वी शिष्य का उदाहरण देते हुए आचार्यश्री ने चारित्र की प्रधानता पर प्रकाश डाला।

१. अविवाहित अवस्था में दीक्षा : भगवान पार्श्व की परंपरा में ही उनके एक महायशस्वी शिष्य थे, उनका नाम था केशी कुमार श्रमण। उन्होंने अविवाहित अवस्था में ही दीक्षा ली और साधुत्व को स्वीकार किया। वे इस परंपरा में चौथे पट्टधर आचार्य थे।

२. ज्ञान और चरित्र का मेल : शास्त्र में उनकी एक बड़ी विशेषता बताई गई है कि वे विद्या में भी और चरण यानी आचार में भी पारगामी थे। पारगामी अर्थात् वे बहुत गहरे विशिष्ट ज्ञानी थे।

३. चारित्र से मुक्ति : विद्यावान होना बड़ी बात है, पर चरित्रहीन विद्या अधूरी है। जिसका चारित्र अच्छा होता है उसकी मुक्ति सुनिश्चित है।

४. दो ज्ञानियों का मिलन : इस अध्ययन में दो ज्ञानी पुरुषों के मिलने और उनकी ज्ञान चर्चा की बात आती है। दो ज्ञानी संतों का मिलना हो जाए और उनकी चर्चा लोगों को सुनने को मिले तो समाज को अत्यधिक लाभ और ज्ञान मिल सकता है।

पुस्तकों के अध्ययन की प्रेरणाः आचार्य श्री ने 'तेरापंथ दर्शन' पुस्तक और 'भिक्षु विचार दर्शन' पुस्तक जो आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा लिखी गई है, इस योगक्षेम वर्ष में उनका अच्छा अध्ययन कर सभी को अपना ज्ञानात्मक विकास करने की पावन प्रेरणा दी।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।